जैन तीर्थवंदना

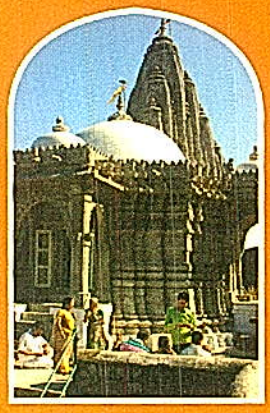

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2542

VOLUME : 7 ISSUE : 3 MUMBAI, SEPTEMBER 2016 PAGES : 40 PRICE : ₹25

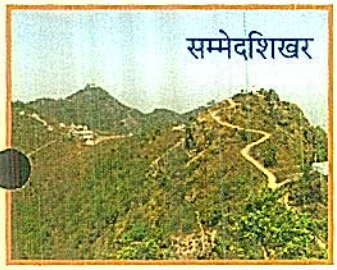

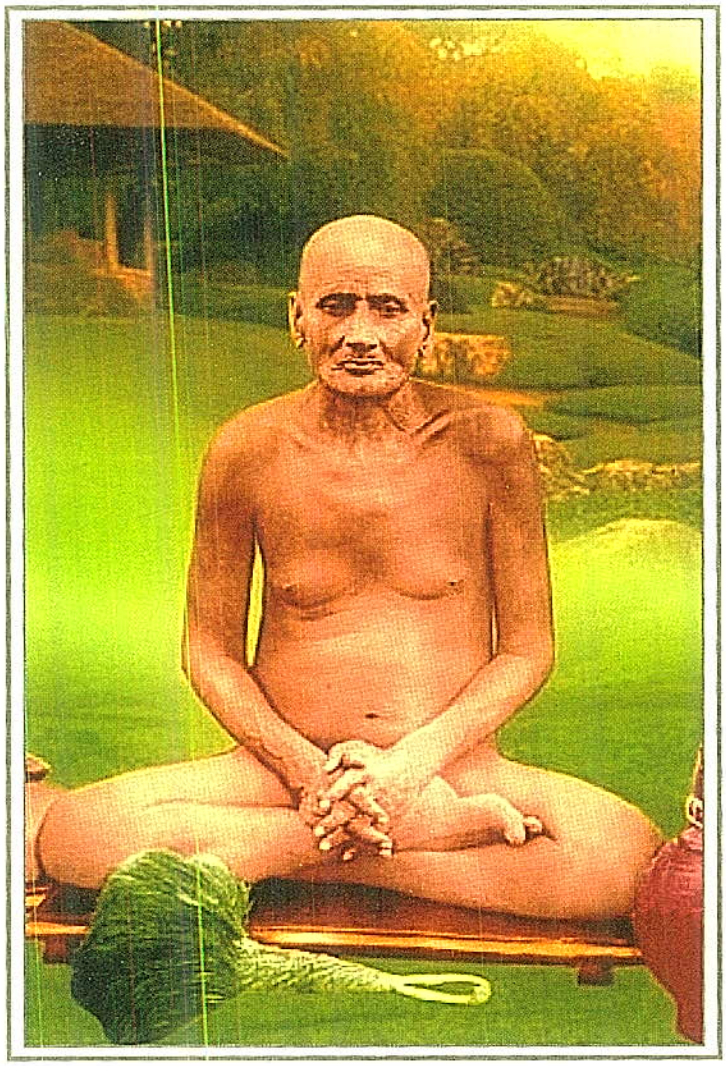

चारित्र चक्रवर्ती, समाधि सम्राट परम पूज्य आचार्य श्री 108 शांतिसागरजी महाराज जी की 61 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर उनके श्री चरणों में शत्-शत् वन्दन, नमन्

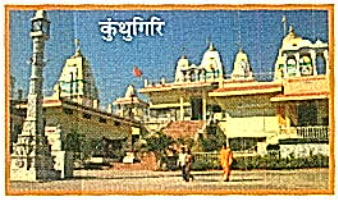

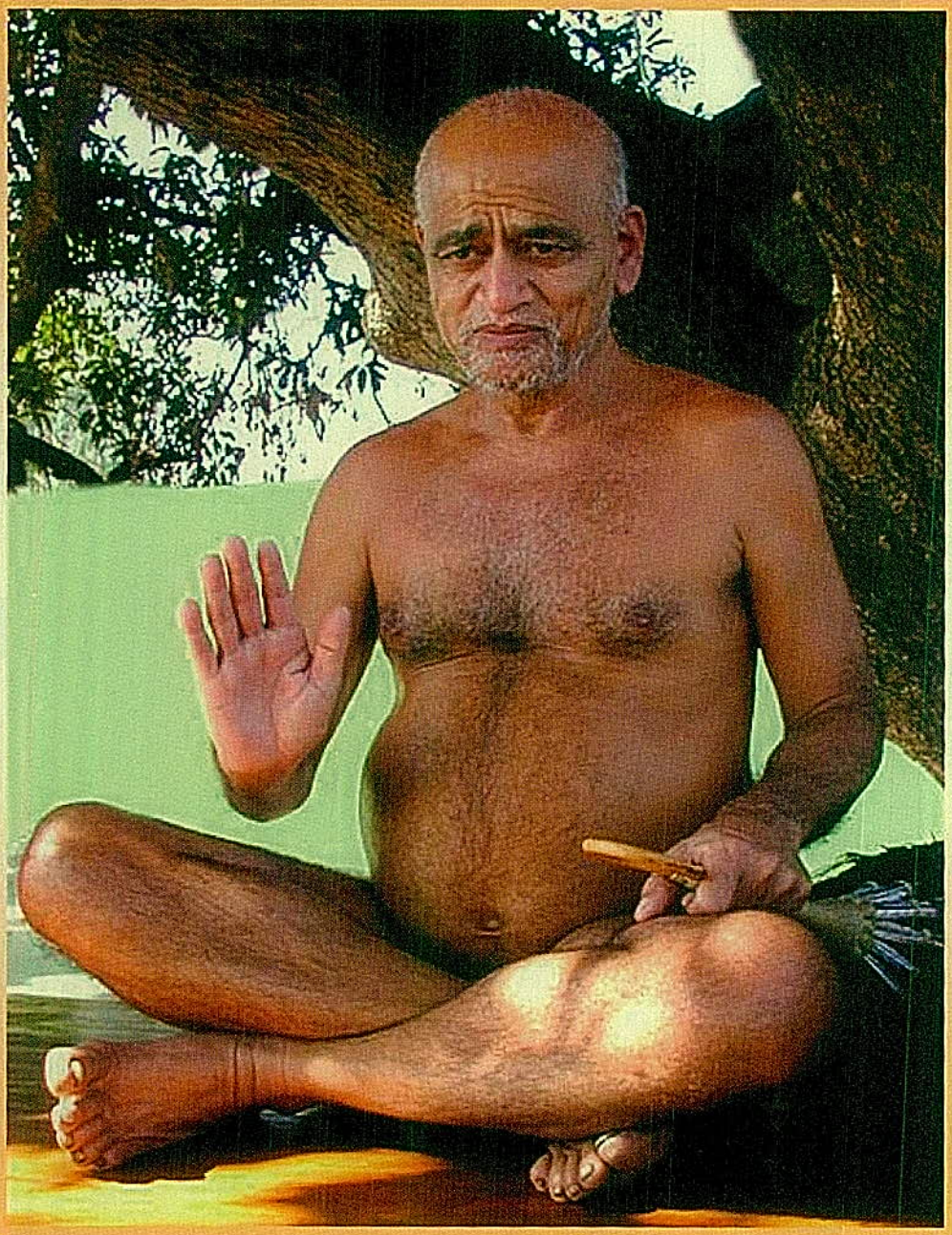

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, 250501-5, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

क्षमा के साथ आंतरिक निर्मलता प्राप्त हो

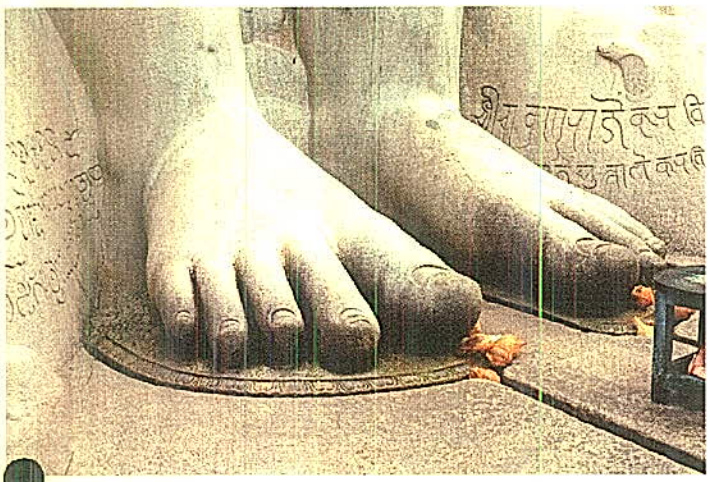

६ सितम्बर से १५ सितम्बर तक हम सभी ने शाश्वत पर्व दशलक्षण पर्व मनाए । १७ सितम्बर को हम सभी क्षमावाणी पर्व मनायेंगे । जब यह अंक आप तक पहुंचेगा, क्षमावाणी पर्व सामने होगा । जब हम क्षमावाणी के संदर्भ में बात करते हैं तो हमें गर्व होता है हमारी श्रमण संस्कृति पर, वैसे तो वर्ष में तीन बार हम 'क्षमावाणी' मना सकते हैं लेकिन सार्वजनिक रूप से एक बार मनाते हैं, हमारे पूर्वाचार्यों ने क्षमा के संदर्भ में जो बातें कही हैं यदि वे हम मानने लगे तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है, में जीवन जीने का मजा आ सकता है, बस एक ही बात करना है क्षमा अंतःकरण से होनी चाहिए जीवन में आंतरिक निर्मलता हमें अंतःकरण की क्षमा से ही प्राप्त हो सकती है । पर्वों की यह श्रृंखला हमें एक-दूसरे से जोड़ती है, विगत माह में स्वतंत्रता दिवस जहाँ हमें लौकिक स्वतंत्रता की याद करा के गया कि हम अब स्वतंत्र हो गए, हमारे ऊपर अब किसी का शासन नहीं है, हमारा अपना लोकतंत्र है, हमारा अपना शासन है, सितम्बर में हमने अपनी पारलौकिक स्वतंत्रता के उपाय, उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आंकिन्चन्य, ब्रहम्चर्य पर चिंतन-मनन किया । प्रतिदिन गुरुओं के सान्निध्य में प्रतिक्रमण, ध्यान, सामायिक कर इन धर्म के दशलक्षणों को समझा, कितना सुंदर है यह पर्व कि हमें अपनी आत्मिक स्वतंत्रता का बोध करता है । धन्य है हमारी संस्कृति व धन्य है उस संस्कृति के जीवंत प्रतिनिधि हमारे दिगम्बर गुरु व हमारी संस्कृति की पहचान हमारे तीर्थ ।

विगत माह १० जुलाई को हम सभी ने मुंबई में जीर्णोद्धार कलश स्थापना का बृहद् महोत्सव किया जिसमें जीर्णोद्धार अनुष्ठान योजना के अंतर्गत देश के १५ प्राचीन जिनालयों के जीर्णोद्धार का निश्चय किया जिसमें महानगरी के २१० परिवार सम्मिलित हुए, जो एक अभूतपूर्व कार्य है । आज आवश्यकता है हमारी संस्कृति को बचाने की, हमारी संस्कृति के मुख्य आधार हैं, तीर्थ, दिगम्बर मुनि व प्राचीन ग्रंथ, यदि ये सुरक्षित हैं तो हम युगों-युगों तक सुरक्षित रह सकेंगे, इस हेतु भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की टीम निरंतर चिंतन-मनन, विचार मंथन कर दिगम्बराचार्यों से आशीर्वाद लेकर कार्य कर रही है, इस कार्य में हमें देशभर का सहयोग मिल रहा है, यह सहयोग निरंतर बढ़ाने की आवश्यकता है, हम चाहते हैं कि तीर्थों का विकास हमारा काम है, हम उस कार्य में निरंतर लगे

रहें, आप सभी से मैं आग्रह करती हूँ कि तीर्थों के विकास हेतु आप जिस प्रकार का सहयोग करना चाहते हैं वह आपसे अपेक्षित है, आप यह सहयोग निरंतर करें व हमें अपने मन के विचार से प्रेषित करें, जिन्हें हम अमल में लाने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

आगामी माह में इस देश में अहिंसा की शक्ति से आजादी दिलाने वाले पूज्य बापू का जन्म दिवस २ अक्टूबर को है जो अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस भी है, हम भी इस दिवस पर अपनी अहिंसा का प्रसार करेंगे। देश का विश्वस्तरीय आयोजन भगवान बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक समारोह फरवरी २०१८ में होना तय है । यह आयोजन हमारा कुंभ है, इस कार्य हेतु हमारे पूज्य भटट्ारक स्वामी चारुकीर्तिजी एक-एक तैयारियों को पूर्ण करने में लगे हुए हैं, महोत्सव की अध्यक्षा होने के नाते मुझे भी इन कार्यों में अपना सहयोग करने का पुण्य अवसर प्राप्त हुआ है, आप सभी इस पुनीत महान कार्य से अपने आप को जोड़ें और महामस्तकाभिषेक का पुण्य अर्जित कर हमारी पीढ़ी को दिखायें कि कितना सौभाग्यशाली अवसर है जहां संपूर्ण देश सिर्फ एक ही रंग में रंगा नजर आता है वह है दिगम्बरत्व का रंग और चारों ओर जैन संस्कृति की ध्वजा दिखाई देती है। आइये जैन समाज का बच्चा-बच्चा इस विश्व की महान धरोहर हमारी पहचान के प्रति नत मस्तक हो व अपनी श्रद्धा का कलश समर्पित करें ऐसी भावना हम सभी की बनें हम यही कामना करते हैं ।

अंत में आप सभी से तीर्थों के विकास में सहयोग व भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महोत्सव में श्रवणबेलगोला पधारने के निवेदन के साथ क्षमाप्रार्थी हूँ। क्षमावाणी के अवसर पर मैं एवं हम सभी जो तीर्थक्षेत्र कमेटी के एक महापरिवार के रूप में कार्य कर रहे हैं, गलतियां होना स्वाभाविक प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया में हम सभी से विगत वर्ष में जो भी त्रुटियां हुई हो हम अंतःकरण से क्षमा चाहते हैं व क्रोध से बचने का निवेदन करते हैं । एक जानकारी जो आप सभी के साथ बांटना चाहती हूँ शायद हम सभी समझ कर क्रोध को छोड़ने का संकल्प लेंगे व 'क्षमा' को धारण करेंगे ।

क्रोध का पूरा खानदान

क्रोध की लाड़ली बहन - जिद
क्रोध की पत्नी है - हिंसा
क्रोध का बड़ा भाई - अहंकार
क्रोध का बाप है - भय
क्रोध की बेटियां है - निंदा और चुगली
क्रोध का बेटा है - बैर
क्रोध की बहू है - ईर्ष्या
क्रोध की पोती है - घृणा
क्रोध की माँ है - उपेक्षा
क्रोध का दादा है - द्वेष

यानी इस क्रोध के कारण हमारे जीवन में इतनी परेशानियां आती है। आइये पर्युषण महापर्व की इस पावन पुनीत बेला पर हम एक-दूसरे से क्षमा करें साथ ही क्रोध से दूर रहने का संकल्प भी ग्रहण करें। इसी भावना के साथ...

खम्मामि सव्वं जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु में ।
मित्ति में सव्व भूदेसू, बेरं मज्झं ण केणवि ।।

क्षमाप्रार्थी
आपकी

Sarita Jain

सरिता एम.के.जैन

अब पर्युषण पर्व भी बीत गया

हमारी समाज में 2-3 महीने पहिले से ही पर्युषण पर्व की आहट सुनाई देने लगती है। जैसे ही साधु संघों के संभावित वर्षायोग स्थलों की ओर विहार प्रारम्भ होते हैं समाज में उत्साह का संचार होने लगता है। इस पृष्ठ पर हम विगत 2-3 माहों से पर्युषण पर्व एवं तीर्थों के प्रति दायित्वों की चर्चा कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आपने उन बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दिया होगा। खैर! अब तो दसलक्षण पर्व या पर्युषण पर्व भी बीत चुका है। हमें आशा है कि आपने अपनी कषायों को मंदकर आत्मा को निर्मल किया होगा मैं आप सबको नमन करते हुए आपके द्वारा किये गये व्रत-उपवासों की अनुमोदना करता हूँ।

अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने देखा है कि फिरोजाबाद (उ.प्र.) में सुगंध दशमी से लेकर आश्विन कृष्ण चतुर्थी तक प्रतिदिन अलग-अलग मंदिरों में धारा/धारें होती थी, आज भी होती है। मेरठ मंडल के गांव-गांव में दसलक्षण के बाद रथयात्रा होती थी आज भी होती हैं। इसको उछाह कहते हैं, संभवत: यह उत्साह का प्रतीक है क्योंकि इसमें रथ के साथ बैंड-बाजे, झाकियां एवं अन्य लवाजमें भी भव्यतापूर्वक रहते हैं जो जन मानस के आकर्षण का केन्द्र बनते हैं। इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश के नगरों में मैंने दसलक्षण पर्व के बाद तीर्थयात्रा/गुरुदर्शन हेतु वर्षायोग स्थल पर जाने की परम्परा देखी है। तीर्थयात्रा छोटी हो या बड़ी होती जरूर है। आपकी तीर्थयात्रा को सरल, सुगम, सुखद एवं विघ्नरहित बनाने हेतु अनेक संस्थाओं / समाज के प्रबुद्धजनों ने डाइरेक्टरीज प्रकाशित की है जो अपनी-अपनी विशेषताओं के साथ तीर्थयात्रा में आपकी सहयोगी हो सकती हैं।

मैं इनके सम्पादकों/प्रकाशकों को उनके इस सामयिक उपयोगी कार्य हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से बधाई देता हूँ एवं उनसे अनुरोध करता हूँ कि इस प्रकार के प्रकाशनों की विशिष्ट प्रकृति, सूचनाओं की परिवर्तनशीलता को ध्यान में रखकर जल्दी नवीन संस्करण प्रकाशित करें। भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक (2018) एवं उससे पूर्व होने वाले अनेकों सम्मेलनों (2017) में सहभागिता देने वाले युवाओं/विद्वानों/समाजसेवियों की सुविधा हेतु दक्षिण भारत के तीर्थों। पर्यटन स्थलों/ नगरों की जानकारी को विशेष रूप से संशोधित/ परिवर्तित करने की जरुरत है। श्रवणबेलगोला या बैंगलोर को केन्द्र बनाकर अनेक यात्रापथ बनाये जा सकते हैं। इनको छोटे-छोटे समूहों में सुविधापूर्वक संचालित करने हेतु स्थानीय समाजों/टूर आपरेटर्स का मार्गदर्शन/ सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

मैं यहां मेरे पास उपलब्ध 4 निर्देशिकाओं/डाइरेक्टरीज का परिचय दे रहा हूँ आप इनका सम्यक उपयोग करें एवं तीर्थों की वन्दना कर सुख की अनुभूति करें यही कामना है।

दिगम्बर जैन तीर्थ निर्देशिका

प्रसाधन सम्पादक डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर

सम्पादक/संयोजक : श्री हसमुख जैन गांधी, इन्दौर

संस्करण : नवम्, 2015 (सितम्बर)

मूल्य : 140 रु. 40.00 पोस्टेज

पृष्ठ एवं आकार: 322 आर्टपेपर, 20X30/8

प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थल- श्री हंसमुख जैन गांधी

211, देवघर काम्पलेक्स, छावनी, इन्दौर 45200/-

0731-2700109 एवं 09302103513

वर्तमान में उपलब्ध निर्देशिकाओं में दि. जैन तीर्थों के बारे में यह सर्वाधिक अद्यतन है। इसमें 230 तीर्थों के बारे में पूरी जानकारी, फोन नं, भोजन, आवास सुविधा सहित दी है। अबतक इसकी 75000 प्रतियों बिक चुकी हैं। पूरी डाइरेक्टरी आर्ट पेपर पर है। प्रमुख नगरों की धर्मशालाओं, अतिथिगृहों, पूज्य भट्टारकों की सम्पर्क सूत्र सहित सूची, विदेशी मंदिरों की सूची ने इसकी उपयोगिता बढ़ाई है।

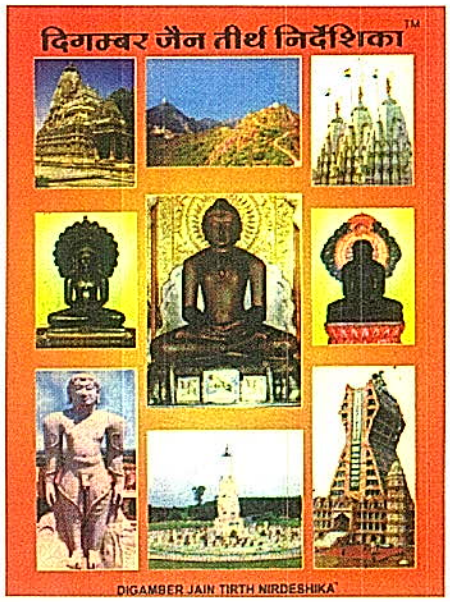

जैन तीर्थ दर्शन (मान चित्र सहित)

संपादक: डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर एवं

श्री सुभाष जैन, दिल्ली (मंत्री)

संस्करण : 2012

मूल्य: 50.00 रु

पृष्ठ एवं आकार: 200, डिमार्ड

प्राप्ति स्थल: अ. भा. दि. जैन परिषद पब्लिसिंग हाउस, 3625, सुभाष मार्ग। दरियागंज नई दिल्ली-110002

तीर्थों एवं समीपवर्ती नगरों का संक्षिप्त परिचय देने से कृति उपयोगी है. ऐतिहासिक महत्व के जैनेतर तथा श्वेताम्बर तीर्थों का यथास्थान परिचय देने से तीर्थयात्रा करने वालों को सुविधा हुई। 303 स्थानों की जानकारी दी गई हैं। परिचय संक्षिप्त हैं।

जैन तीर्थ दर्शन एवं पर्यटन स्थल

लेखक एवं संकल्पकर्ता: डॉ. आर. के. जैन, कोटा

सम्पादक: डॉ. हुकमचंद जैन, कोटा

संस्करण: 2011, प्रथम

मूल्य: रु. 290

पृष्ठ एवं आकार: 316, डिमाई

प्रकाशक: अकलंक शोध संस्थान, वसंत विहार, कोटा (राज.)

0744-2400066, 2402792

विभिन्न राज्यों के तीर्थों के परिचय के पूर्व रंगीन चित्रों एवं विभिन्न समीपवर्ती नगरों, तीर्थों के मध्य दूरी एवं दिशा दिखाने वाले रेखाचित्र अच्छे हैं। विदेश स्थित जैन मन्दिरों, श्वेताम्बर जैन मन्दिरों की सूचियों। सम्पर्क सूत्रों से कृति उपयोगी बन पड़ी है।

सचित्र तीर्थ दर्शन संग्रह

प्रस्तुति एवं संकलन: श्री प्रमोद कुमार एवं श्रीमती शकुन लुहाड़िया

संपादन एवं आकल्पन: श्री पंकज कुमार एवं श्रीमती बीना लुहाड़िया

मूल्य-150 रु.

संस्करण- प्रथम

आकार एवं पृष्ठ- लगभग 350, डिमाई से छोटा डायरी रुप में, सम्पूर्ण रंगीन

प्राप्ती स्थल- जैन नेटवर्क, लुहाड़िया भवन, इ-15, तुलसी मार्ग, बनी पार्क, जयपुर-16

0141-2201260, 09314507638

पूरी प्रति रंगीन चित्रों (मूल नायक एवं अन्य प्रतिमाओं, मानस्तंभो, बाह्य परिसर) से सुसज्जित। सम्पर्क सूत्रों को प्रमुखता से प्रकाशित करने से उपयोगी, यात्रामार्ग के रेखाचित्र अच्छे हैं।

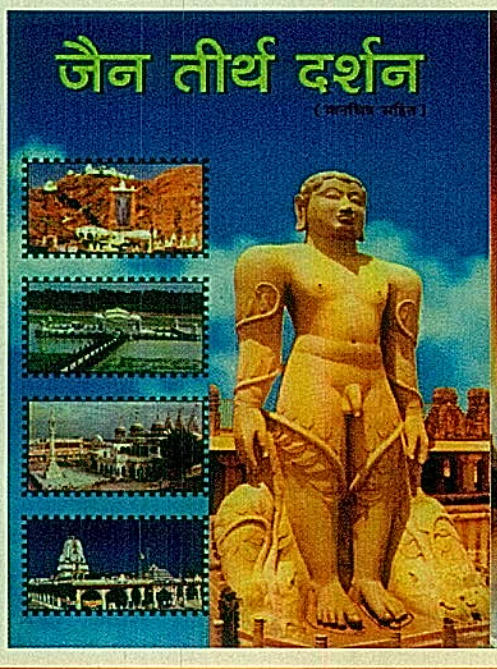

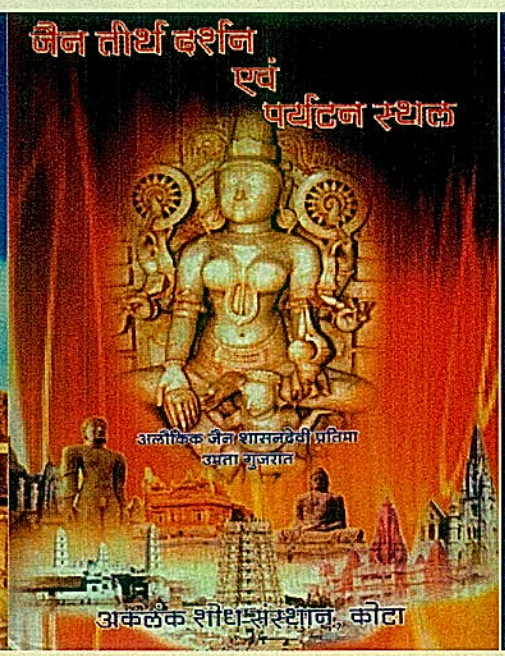

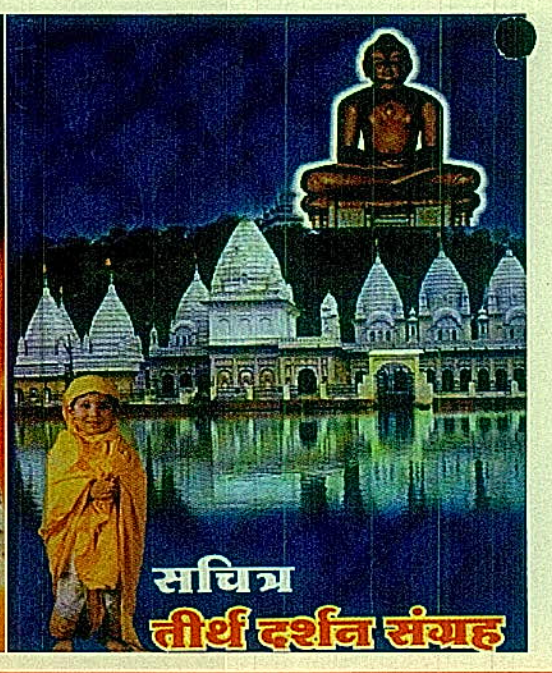

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 7 अंक 3 सितम्बर 2016

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रो.अनुपम जैन, इंदौर - प्रधान संपादक
उमानाथ दुबे - संपादक

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो. डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो. डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

क्षमा के साथ आंतरिक निर्मलता प्राप्त हो	3
अब पर्युषण पर्व भी बीत गया	5
तीर्थक्षेत्र कमेटी की गत 6 महिनों की प्रगति रिपोर्ट	8
वर्षायोग, दशलक्षण एवं क्षमावाणी पर्व	11
क्षमादिन बने राष्ट्रीय त्योहार	13
प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार की सराहनीय पहल	15
जैन एवं हिन्दू धर्म में तीर्थ विषयक मान्यता	17
ACTIVITIES OF ..... – SOUTHERN ANCHAL	21
Part -2- Dawn of Jainism in Tamil Land	26
उदगिर में भूगर्भ से 2000 वर्ष प्राचीन भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्राप्त हुयी	30
महामस्तकाभिषेक कार्यालय का शुभारम्भ	32

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए :-

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चेरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट वाडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।
2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेगें उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

दशलक्षण एवं क्षमावाणी पर्व के पावन अवसर पर

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गत 6 महिनों की प्रगति रिपोर्ट

25 फरवरी 2016 को दिल्ली में संपन्न हुई तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक में पूर्व अध्यक्ष के द्वारा दिये गये त्यागपत्र को स्वीकृत करते हुये उनके स्थान पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के रुप में सर्वानुमति से श्रीमती सरिता एम.के. जैन, चैन्नई को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया। इसी बैठक में तीर्थक्षे कमेटी के महामंत्री का पदभार मुझे सौंपा गया। पदाधिकारी परिषद में हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति के साथ वर्तमान कमेटी ने आपनी पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य को आगे बढाने का संकल्प लिया।

वर्तमान पदाधिकारीयों ने सर्वप्रथम परम पूज्य आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं आदि त्यागियों से उनका मंगलमय आशिर्वाद प्राप्त कर तीर्थक्षेत्र कमेटी को सशक्त बनने और समाज के सहयोग से जैनधर्म और संस्कृति की रक्षा, सुरक्षा और उनके जीर्णोद्धार के कार्यों को आगे बढाने का संकल्प लिया इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदया और उनकी टीम श्वेतांपिच्छाचार्य प. पू. आचार्य विद्यानंद महाराज का आशिर्वाद लेने कुंदकुंद भारती पहुँचे। आचार्य श्री ने अपना मंगल आशीर्वाद देते हुये कहा की तीर्थक्षेत्र कमेटी के 114 वर्ष के इतिहास में यह प्रथम परिवर्तन आया कि इस पद पर आनेका सौभाग्य महिलारत्न दानचिंतामणी श्रीमती सरिता जैन को मिला है। हमे विश्वास है की उनके अध्यक्षीय कार्यकाल में तीर्थक्षेत्र कमेटी में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा। मेरा उनको और उनकी टीम को बहुत-बहुत आशीर्वाद है।

श्रीमती सरिता जैन के अध्यक्ष बनने के बाद पूरे देश में खुशी की लहर फैल गई और समाज के अनेक लोगों ने अपने बधाई संदेश में तीर्थक्षेत्र कमेटी को तन-मन-धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया, 26 फरवरी 2016 को दिल्ली स्थित महासभा के कार्यालय में श्री निर्मलकुमार सेठी के आमंत्रण पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की नवनिर्वाचित अध्यक्षा और उनकी टीम का स्वागत अभिनंदन किया गया। 28 फरवरी 2016 को भाईदास ऑडीटोरियम हॉल विलेपार्ले मुम्बई में परम पूज्य युगलमुनिराज श्री अमरकीर्तिजी एवं श्री अमोघकीर्तिजी के सान्निध्य में मुम्बई जैन समाज द्वारा विशाल सभा का आयोजन कर उसमें श्रीमती सरिता जैन एवं उनकी टीम का भव्य स्वागत अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर परम पूज्य मुनि श्री अमोघकीर्तिजी महाराज एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज ने अपने 17वें दिक्षा दिवस पर **वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट मुम्बई** की ओर से 15 तीर्थक्षेत्रों के मंदिरो जीर्णोद्धार तीर्थक्षेत्र कमेटी के माध्यम से कराये जाने की घोषणा की।

दि.6 मार्च 2016 को श्री मांगीतुंगी क्षेत्र के विशाल पहाड़ पर निर्मित की गई प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की 108 फीट विशाल मुर्ति के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर आयोजित महाराष्ट्र अंचल की वार्षिक सभा में जब तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन, महामंत्री श्री संतोष पेंढारी एवं उनकी टीम के सदस्य वहाँ पहुँचे तो उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया परम पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका ज्ञानमती माताजी एवं ससंघ सभी त्यागियों का मंगल आशीर्वाद कमेटी को मिला।

श्रीमती सरिता जैन और उनकी टीम परम पूज्य आचार्य शिरोमणी श्री विद्यासागरजी मुनिराज, परम पूज्य आचार्य पुष्पदंतसागरजी महाराज, प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदीजी महाराज, आचार्य वर्धमान सागरजी महाराज, मुनि प्रमाणसागरजी महाराज, आर्यिकारत्न ज्ञानमति माताजी आदि गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त करने उनके पास पहुँची और उनसे तीर्थक्षेत्रों के संरक्षक, संवर्धन और उनके सम्यक विकास के साथ प्राचीन एतिहासिक कलापूर्ण एवं पुरातत्व की दृष्टि में महत्वपूर्ण जिन

दशलक्षण एवं क्षमावाणी पर्व

पर्युषण पर्व की समाप्ति एवं क्षमावाणी के इस पावन पर्व पर धर्म को अंगीकार करने का सहज भाव रखते हुए जाने-अनजाने में यदि आपका दिल दुखाया हो तो हम उत्तमक्षमा की याचना करते हैं, और यह संकल्प लेते हैं कि जैन धर्म और संस्कृति के सृजन में तन-मन-धन से समर्पित होकर सेवा करते रहेगें।

सरिता एम.के. जैन
अध्यक्ष

संतोषकुमार जैन पेंढारी
महामंत्री

मंदिरों की सुरक्षा एवं उनके जीर्णोद्धार हेतु मार्गदर्शन प्राप्त किया।

यहां यह उलेखनीय है कि दि. 7 फरवरी 2016 को तीर्थक्षेत्र कमेटी का समन्वय के अनुसार जब पूर्व अध्यक्ष का कार्यकाल समाप्त होने जा रहा था उस बैठक में 17 तीर्थक्षेत्रों, प्रतिभा स्थलियों एवं तमिलनाडू में आये बाढ पीड़ितों को सहायता हेतु कुल मिलकर 1,11,00,000/- रु. का दान स्वीकृत किया गया था। जिसका वितरण वर्तमान पदाधिकारी परिषद की संस्तुति के बाद किया गया।

कर्मयोगी स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी के सान्निध्य में श्रवणबेलगोला में बैठक का आयोजन

दि. 25, 26 मार्च को श्रवणबेलगोला में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद एवं प्रबंधकारीणी समिति की बैठकों का आयोजन कर्मयोगी स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामीजी के सान्निध्य में किया गया है। जिसमें तीर्थक्षेत्र कमेटी का वर्ष 2016-17 का अनुमान पत्रक (बजट) स्वीकृत किया गया। श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दि जैन अति. क्षेत्र सिरपुर के बारे में चल रहे कोर्ट केसेस की पैरवी करने एवं विवादों का स्थाई समाधान ढुँढने हेतु कानूनी विभाग के अंतर्गत एक उपसमिति का गठन किया गया जिसमें पूर्व न्यायाधीशों, वकीलों एवं कमेटी के पदाधिकारी इस प्रकार कुल 12 सदस्यों की समिति गठित की गई।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की नई वेबसाईट लॉन्च करने का निर्णय-

उक्त बैठक में यह प्रस्ताव पास किया गया की श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक ऐसी वेबसाईट लॉन्च की जाय जिससे साधर्मी भाई, बहनों को क्षेत्र का इतिहास सन्निकट शहर से दूरी क्षेत्र पर आवसीय सुविधायें आदि की जानकारी उपलब्ध हो सके। आप सभी को यह जानकर हर्ष होगा की वेबसाईट का काम पूरा कर लिया गया है जिसे शीघ्र ही लॉन्च किया जाएगा।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन को भगवान बाहुबलीमहामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति 2018 का अध्यक्ष चुने जाने का गौरव प्राप्त

दि 26 मार्च को श्रवणबेलगोला में आयोजित एस.डी.जे.एम.आय मेनेजमेन्ट कमेटी की राष्ट्रीय कार्यकरीणी समिति की बैठक में परम्परा नुसार भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन को श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति 2018 का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। स्वयं स्वामीजी ने श्रीमती सरिता जी का गौरव करते हुए कहा की श्रवणबेलगोला के इतिहास में यह प्रथम अवसर आया है कि जब एक धर्मपरायण महिला को यह सम्मान मिला है। जिसके लिए श्रवणबेलगोला मेनेजमेन्ट कमेटी की ओर से श्रीमती सरिता जैन का स्वर्णमुकुट, शाल, श्रीफल, पुष्पगुच्छ, प्रदान कर उनका स्वागत किया गया तथा उनके सम्मान में शोभायात्रा भी निकाली गई।

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की पादाधिकारी परिषद की बैठक का आयोजन

दि. 26 जून, 2016 को तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की बैठक श्री सम्मेदशिखर क्षेत्र पर संपन्न हुई। जिसमें सम्मेदशिखर पहाड़ पर चल रहे विकास कार्यो की समीक्षा की गई। सम्मेदशिखर मधुबन पारसनाथ के प्रमुख संयोजक श्री एम.पी अजमेरा (आय.ए.एस.रिटायर्ड) रांची ने झारखण्ड सरकार द्वारा पारसनाथ क्षेत्र के विकास हेतु की गई कार्यवाहियों एवं भावी योजनायों की जानकारी दी गई। **जिसमें मधुबन में थाना स्थापित करने, पहाड की चोटी पर हेलीपेड बनाये जाने। वंदनापथ का उन्नतीकरण, मधुबन में पार्किंग की व्यवस्था, पर्यटन सूचना केंद्र एवं डोली शेड का निर्माण, शिखरजी पहाड पर सोलर लॅम्प लगाए जाने की व्यवस्था मधुबन में जल आपूर्ति, शिखरजी क्षेत्र को धार्मिक पावन तीर्थक्षेत्र के रुप विकसित करने तथा मधुबन के ईर्द-गिर्द 6 किलो मीटर की परिधि में मांस, मदिरा की विक्री पर पूर्ण प्रतिबंध, सड़क का चौड़ी करण करना 24 घंटे विजली की आपूर्ति, तीर्थंकर पार्क बनाये जाने एवं मधुबन में हॉस्पिटल की व्यवस्था आदि अनेकों योजनाओं पर झारखण्ड सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी।**

इसी बैठक में महाराष्ट्र प्रांतीय समिती के वरिष्ठ उपाध्यक्ष **श्री अनिल पवनकुमार जमगे**, सोलापुर को राष्ट्रीय स्तर पर **तीर्थविकास एवं जीर्णोद्धार समिति** का **चेअरमैन** एवं बीस पंथी कोठी के अध्यक्ष **श्री अजयकुमार जैन**, आरा को **तीर्थविकास एवं जीर्णोद्धार समिति पूर्वांचल** का **चेअरमैन** नियुक्त किया गया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पर संचालित श्री दिगम्बर जैन प्रबंधन, प्रशिक्षण, संस्थान जहाँ पिछले कई वर्षो से जैन युवाओं को प्रशिक्षित कर रोजगार दिलाने के उद्देश से विद्वान, मैनेजर, मुनीम, पुजारी, कम्प्युटर ऑपरेटर,

विधिविधान, ज्योतिष, जैन दर्शन, वास्तु एवं प्रवचन करने की कला आदि का प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार दिलाया जा रहा है। उसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से प्रतिवर्ष रु. 6 लाख का बजट स्वीकृत किया गया है।

भारतवर्षीय दिगम्बर तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में मुनिद्वय परम पूज्य अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज के सान्निध्य में दि. 10 जुलाई 2016 को मुम्बई में जीर्णोद्धार अनुष्ठान का भव्य कार्यक्रम - 15 तीर्थक्षेत्रों के मंदिरों का जीर्णोद्धार कराये जाने का संकल्प

भारतीय संस्कृति में जैन संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन एवं ऐतिहासिक संस्कृति हैं। विश्व में आज जो संस्कृति दिखाई दे रही हैं। उसका मुख्य कारण उस धर्म, संप्रदाय में देव,शास्त्र और गुरु हैं। मंदिर, मठ एवं धर्म गुरु होने से उनका अस्तित्व संसार में विद्यमान है, जिस सम्प्रदाय संस्कृति में कोई गुरु नहीं, मंदिर मूर्तिया नहीं उस धर्म सम्प्रदाय का अस्तित्व आज नहीं है। हम जिनेन्द्र भगवान के अनुयायी हैं। हमारे लिए यह प्राचीन मंदिर संस्कारों के केन्द्र रहे हैं। जहाँ पर व्यक्ति अपने दु:खों को विस्मृत करता हैं। संस्कारवान आत्माओं की जहाँ पर आराधना होती हैं, जीवन के निर्माण की प्रेरणा इन्हीं मंदिरों से प्राप्त होती है, हमारे ऋषी मुनि अपनी आत्मा से जुड़ने की साधना करते हैं, योग धारण करते हैं,और तपस्या करते-करते निर्वाण को प्राप्त होते हैं, यही भूमियाँ तीर्थों का रूप लेती हैं तीर्थ का मतलब संसार सागर से तिरा जाय। वह तीर्थभूमि पवित्र हो जाती है, जहाँ हमारे पापों का नाश हो जाता है। तीर्थ हमारे मन को पवित्र करने वाले होते हैं। हमें तीर्थ की रक्षा, सुरक्षा करना हमारी आत्मा की सुरक्षा करना है, जैन होने के नाते हमारा यह उत्तरदायित्व बनता है कि जैन संस्कृति को बचाने के लिए हमें उदार हस्त से योगदान देना चाहिए। यह शंखनाद दि. 10 जुलाई 2016 को मुम्बई में आयोजित जीर्णोद्धार कलश स्थापना अनुष्ठान समारोह में मुनिद्वय ने किया। इस अवसर पर मुनिद्वय की प्रेरणा से प्रेरित होकर मुम्बई महानगर के 210 दानवीर परिवारों ने जीर्णोद्धार अनुष्ठान में भाग लिया और देश के 15 प्राचीन जीर्णशीर्ण जिनालयों के जीर्णोद्धार का संकल्प लिया।

इसके प्रथम चरण में देश के 6 राज्यों महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडू और कर्नाटक के प्राचीन मंदिरों का चयन कर उनका निरिक्षण कर जीर्णोद्धार कराये जाने का निश्चय किया गया है। इसकी एक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म भी तैयार की गई है जिसका फिल्मांकन अनुष्ठान समारोह के अवसर पर किया गया जिसकी मुक्तकंठ से सराहना की गई है तथा इस अनुष्ठान के तहत जो भी राशि एकत्रित हुई है। उसका उपयोग प्रथम चरण में 15 प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार करने का निश्चय किया गया। अनुष्ठान समारोह सम्पन्न करने हेतु परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदीजी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद रहा है।

जीर्णोद्धार अनुष्ठान में 210 परिवारों के सदस्य सम्मिलित हुए जिन्होंने अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग जिन आयतनों के जीर्णोद्धार में प्रदान किये।

मुनिद्वय ने जीर्णोद्धार अर्थ समझाते हुए बताया की आगम के अनुसार **सौ मंदिरों के निर्माण से जो पुण्य संचय होता है, वह एक प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार के बराबर है।** इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जो पिछले 114 वर्षों से तीर्थों के विकास हेतु कार्यरत है, जिसकी वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा दानशिरोमणी श्रीमती सरिता एम.के.जैन है जिन्होंने अनेक तीर्थों के जीर्णोद्धार में सराहनीय योगदान दिया है और सतत कार्य कर रही है, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, श्री अनिल पवनकुमार जमगे, श्री रविंद्र कटके आदि का सराहनीय योगदान है। इन सभी कार्यकर्ताओं को हमारा मंगल आशीर्वाद है। मंदिरों के जीर्णोद्धार का यह अनुष्ठान इसके आगे भी होता रहेगा। ऐसी घोषणा मुनिद्वय ने अपने मंगल प्रवचन में की।

इस अवसर पर श्रवणबेलगोला महोत्सव समिति 2018 की नवनिर्वाचित अध्यक्षा एवं उनकी टीम ने मुनिद्वय को महोत्सव सम्मिलित होने के लिए श्रीफल भेंट कर आमंत्रित किया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार करते हुए महोत्सव में पधारने की स्वीकृति दी।

सदस्यता अभियान

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों के प्रयासों से अब तक 2 परम सम्माननीय सदस्य 3 सम्माननीय सदस्य और 98 आजीवन सदस्य बानाये गये हैं निरंतर प्रयास किया जा रहा है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों के संचालन हेतु पदाधिकारीयों का निरंतर पूरे देश में भ्रमण हो रहा हैं। राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन, एवं महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी जन संपर्क स्थापित करने में रात-दिन जुटे हुए हैं।

वर्षायोग, दशलक्षण एवं क्षमावाणी पर्व

- प्रोफेसर भागचन्द्र जैन भास्कर

1. वर्षायोग

वर्षायोग चातुर्मास का रूपान्तरण है। वह श्रावक के लिए अध्यात्म संदेश वाहक है, और साधुओं के लिए पर्युषाकल्प है जिसमें एक ही स्थान पर वह चारमाह तक वर्षाकाल में रहते हैं। वर्षायोग की यह परम्परा तीर्थंकर ऋषभदेव से ही चली आ रही है जो तीर्थंकर पार्श्वनाथ और महावीर तक निश्चित ही अविच्छिन्न रुप से जुडी रही है। पालि त्रिपिटक इस ऐतिहासिक तथ्य का साक्षी है। तथागत बुद्ध ने अपना वर्षावास इसी जैन परम्परा को देखकर प्रारम्भ किया था। इस वर्षायोग के पीछे यह उद्देश्य रहा है कि साधुसमुदाय वनस्तपिकायिक जीवों के घात से बच सके। शास्त्रों में वर्षायोग की अवधि है- आषाढ शुक्ल चातुर्दशी की पूर्व रात्रि से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पश्चिम रात्रि तक।

साधु सम्प्रदाय में वर्षायोग के लिए ऐसे स्थान के चुनाव का विधान है जिसमें उसे स्वाध्याय, आदि में किसी प्रकार का व्यवधान न हो, जीव विराधना न हो और उपसर्गादि की भी सम्भावना न हो।

आज चातुर्मास कराना बहुव्यय साध्य हो गया है। लाखों रुपयों से मंगलकलश की स्थापना की जाती है। मोल-तोल कर चातुर्मास हो पाता है। किन्हीं-किन्हीं संघों का चातुर्मास तो करोडों तक पहुंच जाता है। उनके साथ अनेक व-हदाकार योजनाएं भी जुडी रहती हैं। इन योजनाओं से धर्म प्रभावना पुष्पित-फलित होती है जो हमारे संस्कारों को जागृत करती है नई-पीढी में धार्मिक चेतना को अंकुरित करती है और पुरानी पीढी में जिन्दगी को सम्हारने में अपना योगदान कराती है।

इसके बावजूद साधु सम्प्रदाय में यह वर्षावास दर्शन और प्रदर्शन का विषय बनता जा रहा है। साधना बिखरती जा रही है। मन्त्रियों के दरबार की आकांक्षा में आराधना सूख रही है और राजनीतिक साधना के फल पुष्पित-फलित हो रहे हैं। उनकी अनावश्यक वृहदाकार योजनाओं ने समाज का आर्थिक पक्ष कमजोर किया है और सामाजिक विघटन के बीज-रोपन में सहयोग दिया है। वर्षावास का यह विकृत रूप समाज के पक्ष में भले ही दिख रहा हो पर साधु की साधना के लिए निश्चित रुप से एक व्यवधान के रूप में खडा हो गया है। शिथिलाचार भी एक और भयानक डंश मार रहा है आराधक की सारी क्रियाओं पर तो दूसरी ओर श्रावक समुदाय में आलोचना के स्वर मुखरित होने को भी कोई रोक नहीं पा रहा है। पुरस्कारों की बाढ ने भले ही उसे कम करने का प्रयत्न किया पर उसके साथ पक्षपात के भूत ने उसे विकराल भी बना दिया है।

2. दशलक्षणी पर्व

चातुर्मास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है पर्वाराधना जो जैन संस्कृति की अप्रतिम विशेषता है। इसका सम्बन्ध खाने पीने और मौज मस्ती से नहीं बल्कि भौतिक चकाचौंध हटकर आत्मचिन्तन से है जिसमें साधक बाह्य संसार से सिकुड़ता हुआ आत्मतत्त्व की गहराई तक जाता है, आत्माराधना में डूबता है, निमज्जन करता है और सम्यक्त्व प्राप्ति की दिशा में आगे कदम बढाता है। जैनधर्म अध्यात्म मूलक है, इसलिए उसके सारे पर्व सांसारिक उत्सव न होकर चेतना के ऊर्ध्वकरण की ओर उन्मुख होते दिखाई देते हैं।

दशलक्षण अथवा पर्युषण पर्व इसी ज्ञायक स्वभावी आत्मा की खोज का एक विशिष्ट साधन है। उसे पाने के लिए सदाचरण को विशेष महत्त्व दिया गया है। यहां तक कि तीर्थंकर महावीर को विशुद्ध आचरण वादी होना पड़ा। जैनागमों का प्रारम्भ ही आचारांग से होता है जहाँ कहा गया हैं- णाणस्स सारो आयारो। आचरण का प्रमुखतम साधन है- सहयोग, सद्भाव समन्वय और समता भाव। इन भावों पर आधारित हमारी जीवन शैली निश्चित ही सुसंस्कृत संघर्ष-विहीन और निष्कंटक होगी। दशलक्षण या पर्युषण पर्व ऐसे ही सदाचरण की वकालत करता है और जीवन को नयी रोशनी से भर देता है।

दिगम्बर परम्परा में दशलक्षण पर्व भाद्रपद शुक्ला पंचमी से प्रारम्भ होता है और अनन्त चतुर्दशी को समाप्त होता है। इन दस दिनों में आत्म साधिकों की आध्यात्मिक साधना के कारणभूत सधर्मों का विवेचन किया जाता है जिससे साधक अपने जीवन को सार्थक करने का यथाशक्य प्रयत्न करता है। ये दस धर्म हैं क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिचन्य और ब्रम्हचर्य। इन दस धर्मों के सन्दर्भ में आचार्यों के बीच कुछ मतभेद हैं। श्वेताम्बर परम्परा में मार्दव और संयम के स्थानपर क्रमशः मुक्ति और लाघव धर्मों को संयोजित किया गया है। दिगम्बर परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्द और कार्तिकेयानुप्रेक्षा का अनुकरण किया गया है। परन्तु तत्वार्थसूत्र (9.6) में उमास्वामी ने शौच के स्थान पर सत्य का प्रयोग किया है। मूलाचार (गाथा 993) में ये दस धर्म कुछ अलग दिखाई देते हैं। क्षमा, मार्दव, आर्जव, लाघव, तप, संयम, आकिंचन, ब्रम्हचर्य, सत्य और त्याग। वर्तमान में आचार्य कुन्दकुन्द की ही परम्परा का अनुकरण किया गया है- क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन और ब्रह्मचर्य।

इन धर्मों में प्रथम चार धर्म चार कषायों की शमनावस्था रूप हैं और उसके बाद के धर्म क्रमशः आध्यात्मिक उपलब्धियों के सूचक हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चारों कषायों के शमन करने के लिए क्रमशः क्षमा,

मार्दव, आर्जव और शौच धर्मों की व्याख्या की जाती है। इन धर्मों के परिपालन से सत्यमार्ग की उपलब्धि होती है, संयमित जीवन शुरु होता है, फिर साधक तप और त्याग की और बढता है। परिणामत: वह अकिंचन हो जाता है और ब्रह्मचर्य अर्थात् शुद्ध आत्म-रमण करने लगता है।

दशलक्षण पर्व के दिनों में उपर्युक्त दस धर्मों पर उबाऊ प्रवचन होते हैं। उबाऊ इसलिए कि इन धर्मों के पोषण में जो कथाएं सुनाई जाती हैं वे पारम्परिक अधिक होती हैं। इसलिए सभी उनसे परिचित रहते हैं। उन धर्मों का विवेचन आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हो तो अधिक अच्छा है, उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी किया जाना चाहिए। इन्हीं दिनों क्रमश: तत्त्वार्थसूत्र का वाचन और विश्लेषण भी किया जाता है।

इन धर्मों का सन्दर्भ वस्तुत: हमारी जीवन चर्या से है। जैन धर्म भी एक जीवन पद्धति है। जीवन को सम्हारने और इसे अध्यात्मिकता की ओर मोडने की दृष्टि से ही इन धर्मों को इस दशलक्षण धर्म के, साथ जोड़ा गया है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि श्वेताम्बर परम्परा में दिगम्बर परम्परा से पहले अष्ट दिवसीय पर्युषण पर्व मनाया जाता है और कल्पसूत्र का वाचन किया जाता है। उसमें समताभाव स्थापित करने की प्रक्रिया का वर्णन है। उत्तरकाल में इस वाचन प्रक्रिया में पौरोहित्य बढ गया और आडम्बर ने अपना स्थान मजबूत कर लिया। सामाजिक और आध्यात्मिक नेताओं ने आत्मसिद्धि के साथ इस प्रवंचना को दूर करने की ओर अपना ध्यान केन्द्रित किया। फलत: उनकी दृष्टि अन्तगढसूत्र पर जमी। अन्तकृद दशांग में उन साधकों की चर्चा है जिन्होंने संसार-सागर को पार करने के लिए अथक प्रयत्न किया और अन्त में निर्वाण प्राप्त किया। इसमें ऐसे गौतम, सागर, अंचल, गजसुकुमार, दृढनेमि आदि दस साधकों का वर्णन हुआ है।

इसके बाद दशलक्षण पर्व आता है जिसमें तीर्थंकर महावीर और उनके साधकों की जीवन चर्या के आधार भूत तत्त्व क्षमा, मार्दव, आदि जैसे आत्मिक भावों का चिन्तन किया जाता है। साधक इन दस दिनों स्वानुभूति पूर्वक चिन्तन, धर्म-मन्थन करता है, संक्लेश परिणामों से दूर रहने का प्रयत्न करता है और भेदविज्ञान की ओर आगे बढता है।

धर्म का उद्देश्य होता है- वर्तमान जीवन में सुधार लाना। इस उद्देश्य से धार्मिक धर्म के मर्म को समझता है और गुरु के पास जाकर दु:ख-मुक्ति का उपाय पूछता है? गुरु कहता है कि दु:खों से मुक्त होने का उपाय है- दूसरों की ओर न झांका जाये। इसी को हम स्वानुभूति की प्रतीति कहते हैं। यह प्रतीति समय और श्रम साध्य है। रत्नत्रय की परिपालना से ही यह सम्भव है। ये दोनों पर्व यदि दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदाय एक साथ मानने लगे तो सामाजिक एकता की ओर भी हम बढ सकते हैं।

3. क्षमावाणी पर्व

साधारण तौर पर यह देखा जाता है कि व्यक्ति जैसे ही मृत्यु की चिन्ता करता है। वह धर्माराधना की ओर अपना कदम बढाने लगता है। मृत्यु से बचने के लिए हमने सुखाभासों में जीकर अनेक कबर बना लिए हैं और इस मिथ्या-भ्रम से ग्रस्त हैं कि धन, सम्पत्ति और परिवार हमारा है। हमें उनसे कोई अलग नहीं कर सकता, पर यह सही नहीं है। ये सभी पदार्थ पर हैं और इन्हें छोड़कर एक दिन हमें यहां से जाना ही होगा। यह चिन्तन जितना गहरा होगा। धर्म की ओर हमारे कदम पुख्ता होंगे। आध्यात्मिक शरण के अतिरिक्त और कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

व्यक्ति के धार्मिक होने में एक और भी कारण है-स्वानुभूति। स्व-पर भेदविज्ञान स्वानुभूति का कारण होता है। साधक की इन्द्रियां, मन चित्त या बुद्धि की स्थिति को परखकर उसकी अनुभूति की गहराई को समझा जा सकता है और अनुभूति की गहराई में ही धर्म का अवतरण होता है।

पर्वाराधना के फलस्वरूप विधायक भावों के बीच क्षमाधर्म पनपता है। क्रोध का कारण उपस्थित रहने पर जो थोडा भी क्रोध नहीं करता उसको उत्तम क्षमा धर्म होता है। पूज्यपाद ने क्षमा के स्थान पर शान्ति शब्द का प्रयोग किया है और उसे क्रोधादि विभावों से निवृत्ति रुप माना है (सर्वार्थसिद्धि, 6.12)। सिद्धसेनगणि और अभयदेव ने भी शान्ति शब्द की यही व्याख्या की है।

आचार्य कुन्दकुन्द , उमास्वामी, कार्तिकेय जैसे प्रमुख आचार्यों ने क्षमा शब्द का प्रयोग किया है और उसे शान्ति का समानार्थक माना है। परन्तु सिद्धसेनगणि ने क्षमा और शान्ति में कुछ अन्तर किया है। उन्होंने क्रोध निवृत्ति को शान्ति कहा है और सहन करने को क्षमा कहा है। आवश्यक चूर्णि में क्षमा, तितिक्षा और क्रोत्र निरोध को समानार्थक माना है। तदनुसार आक्रोश, ताडन आदि को सहन करना, क्रोधोदय का निग्रह करना और उदय में आये हुए क्रोध को विफल करना, क्षमा है। क्षमा के इन सभी लक्षणों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। उन सभी में क्षमा की ही व्याख्या देखी जा सकती है।

व्यक्ति में सम्यग्दर्शन के पालन करने से क्षमा आती है और वैभाविक क्रोध का जन्म मिथ्यादर्शन से होता है। मिथ्यादर्शन के कारण ही व्यक्ति कर्तृत्व बुद्धि से पर-पदार्थों में राग करता है, आसक्ति करता है। फलत: उनके संरक्षण करने में क्रोध की स्वभावत: उत्पत्ति हो जाती है। वही क्रोध जन्म-जन्मान्तरों तक दु:ख का कारण बन जाता है।

उत्तम क्षमावान, होने की स्थिति तक पहुँचना बहुत बडी कठिन साधना का काम है, चित्त की विशुद्ध अवस्था उसके लिए अत्यावश्यक है। पंचम गुणस्थानवर्ती अणुव्रती से लेकर नौवें-दसवें गुण स्थानवर्ती महाव्रती को उत्तम क्षमा होती है। पर नौवें ग्रैवेयक तक पहुंचने वाले मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी को उत्तम क्षमा नहीं होती।

आइये, हम सभी उत्तम क्षमा को प्राप्त करने का यथाशक्य प्रयत्न करें और यथार्थ में सही हृदय से परम्परा क्षमा-याचना करें।

क्षमादिन बने राष्ट्रीय त्योहार

- सुनील एम.काला, औरंगाबाद

क्षमा वीरस्य भूषणम्

बहुविधता यह भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। अलग अलग भाषा, धर्म, पंथ, रीतीरिवाज, विचारधारा ये सारे अपनी भारतीय संस्कृति की उदात्तका की चरण कमलों पर बहुत ही सुखचैन से एकसाथ निवास करती है। हजारों वर्ष की इस भारतीय संस्कृति का अलगपन है वो उसके सर्व समावेशकता में। दुनिया में जो भी कुछ अच्छा है वो अपने में बहुत ही सहजता से समा लेने की अद्‌भुत क्षमता इस संस्कृति में कूट कूट कर भरी हुई है। इसीलिये दुनिया में किसी भी देश में नहीं इतनी विविधता हमारे देश में दिखायी देती है। यहां के हर व्यक्ती में वो इस तरह समायी हुई है की अपनी अलग पहचान बताते हुये भी हर किसी के बीज इसी भारतीय संस्कृति में ही पनपे है यह सिद्ध हो जाता है। यहा के मूलनिवासी कौन और बाहर के कौन यह पहचान पाना भी अब असंभवसा है।इसीलिये बाहर के किसी भी देश के परिमाण यहा लागू नही होते। इतनी विविधता के बावजूद आप सब एक कैसे इस प्रश्न का उत्तर भी एक ही है, और वो है इस देश की संस्कृति और सभ्यता। आधुनिक भारत का निर्माण करते समय भी हमने कई नयी परंपराये अपनायी। विज्ञान-तंत्रज्ञान के साथ में नये उत्स, नयी वेशभूषा, उत्सव ये सारा हमने बहुत ही उत्साह से अपनाया। इस नयेपन को भी हमने अपने भारतीय संस्कृति की चौखट में कुछ इस तरह से न दिया की ये अपनी अलग पहचान ही भूल गये। भारत की यही विशेषता पूरे संसार को अपनी ओर आकर्षित करती है। नया, अच्छा कुछ भी स्वीकारने में कभी भी पीछे ना रहनेवाले भारत ने भी दुनिया को कई नयी परंपराये, विचारधारा से अवगत कराया और पूरी दुनिया में वो बखुबी निभायी जा रही है। हमारे देश के कुछ मानचिन्ह हैं, जैसे मोर राष्ट्रीय पक्षी, सिंह राष्ट्रीय पशु, अशोकचक्र, तिरंगा आदि "स्वातंत्र्यदिन" और प्रजासत्ताक दिन। ये हमारे देश के राष्ट्रीय त्योहार। इसी तरह दिवाली, ईद, ख्रिसमस आदि कई त्योहार अलग-अलग धर्मों की मान्यताओं पर उसी परंपरा के अनुसार मनाये जाते हैं। लेकिन इस में एक कमी अक्सर अखरती है, कि अपने देश में अपनी परंपरा, विचारधारा, सोच के अनुसार सभी के लिये एक भी त्योहार नहीं है। हमारी संस्कृति की उदात्तता, महानता को प्रकट करने वाला सभी मना सके ऐसा कोई त्योहार होना बहुत ही जरुरी है। परंपरा से चलते आ रहे किसी भी त्योहार में कोई परिवर्तन, बदलाव किये बगैर हमारी उच्चतम परंपराओं को, विचारों को, तत्त्वज्ञान को अपने में समा सके ऐसा एक

सर्व समावेशक त्योहार अपनाने की आज जरुरत है। दुनिया के सामने कई आदर्श प्रस्तुत करने वाले भारत ने इस त्योहार के माध्यम से एक सर्व समावेशक, सब विचारधाराओं को साथ लेकर चलनेवाला, उच्च आदर्श प्रस्तुत करनेवाला त्योहार स्थापित करना अत्यावश्यक हो गया है। भारत में कई धर्म, पंथ एक साथ बडे ही भाईचारे से गुजर-बसर करते हैं क्योंकि इस देश की संस्कृति ने उन्हें अपने अपने तरीके से चलने की अनुमति दे दी है। सब धर्मों का मूल एक ही है, सब धर्म मानव उत्थान का ही मार्ग सिखाते हैं। सब धर्मों का मूलभूत तत्त्वज्ञान हमने बगैर किसी शर्त के और सहर्ष स्वीकार किये इसीलिये ये संस्कृति इतनी महान बन पायी। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन उन्नत करने के लिये, और संवेदनक्षम बनाने के लिय और उदार बनाने के लिये हमने मानवता के कई विचारों को अपनाया। 'क्षमा' यह तत्त्व हमने इसी तरह स्वीकृत किया है। वो हमारे वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का एक अविभाज्य अंग है। दुनिया के हर धर्म ने 'क्षमा' को अपने तत्त्वज्ञान में बहुत ही उच्च स्थान दिया है। 'क्षमा मांगना' और 'क्षमा करना' ये दोनों भी बातें हर धर्म में, तत्त्वज्ञान में अलग अलग तरह से सम्मिलित है।

इसी तरह जैन धर्म में भी क्षमापना पर्व को असाधारण महत्त्व है। इस पर्व का पालन जैन धर्मीय बड़े ही श्रद्धा से करते हैं। हर धर्म में बड़ा महत्त्व रखनेवाले इस क्षमापना पर्व को हर व्यक्ति तक उसकी पूरी गरिमा के साथ पहुंचाना आज के असहिष्णुतापूर्ण वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है। हिंदू, मुस्लिम, ख्रिश्चन, बौद्ध, जैन, पारसी, सिक्ख, कोई भी धर्म लीजीये, उसमें क्षमा को बहुत बड़ा स्थान दिया गया है। सब धर्मग्रंथों में, त्योहारों में यह बात बड़ी स्पष्टता से प्रतीत होती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतार कार्य की समाप्ति एक निशाद के बाण से हुआ। अपना देह त्यागते

समय भगवन ने उसको स्वर्ग प्राप्ति का वरदान दिया। अपने को क्रॉस पर चढ़ा कर कील मारने वालों को भगवान क्षमा करे, यही प्रार्थना प्रभू येशु की दिल से निकली थी। कुरान में कहा है कि जो क्रोध को काबू में रखकर दुसरों को क्षमा करता है, अल्लाह उसी नेक बंदे से प्यार करता है। गुरु ग्रंथसाहिब में क्षमा करना ये वीरता का लक्षण माना गया है। भगवान बुद्ध का सारा जीवन की प्रेम, करुणा और अहिंसा पर आधारित था।

ऐसे इस क्षमाभाव को अपने जीवन में लाने के लिये, उसके सातत्यपूर्ण आचरण के लिये, इसे अपने संस्कारों में पूरी तरह से उतारने के लिये आज प्रेरक की आवश्यकता है। यह प्रेरणा का काम कर सकता है एक नया राष्ट्रीय त्योहार। किसी भी जाति या धर्म का नहीं फिर भी सबका यही होता है राष्ट्रीय त्योहार। इस त्योहार की एक विशेषता यह भी होगी की वह धार्मिक, सामाजिक या राष्ट्रीय किसी भी तरह उतनी ही सार्थकता के साथ मनाया जा सकता है। इसे मनाने की कोई नयी संकल्पना भी निश्चित की जा सकती है। यह त्योहार व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप से भी मनाना संभव है।

१५ अगस्त और २६ जनवरी ये अपने देश के दो महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार। लेकिन यह दोनों त्योहार एक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं। देश की आजादी और प्रजातंत्र का स्वीकार इन घटनाओं के स्मरण में हम इन्हें मनाते हैं। भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों में बनी है, विकसित हुई है। इसके विकसन में कई कठनाईयां, कई मोड, कई रुकावटे, कई आक्रमण आये। उन सब का सामना करते-करते ही यह संस्कृति और परिपूर्ण, समृद्ध बनती गयी। इस संस्कृति की विकसन के समुद्र मंथन से निकला हुआ एक अनमोल रत्न है 'क्षमा'। क्षमा का तत्त्वज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के दिल में, दिमाग में और आचरण में भी पूरी तरह से उतरना अत्यावश्यक है। इसके आचरण से ही समाज में बंधुभाव, प्यार बढ़ेगा, सुख-शांति और समृद्धी अपना द्वार खटखटायेगी। हजारों वर्षों से सभी महापुरुष यही बात हमें बताते आये, लेकिन आज का माहौल देखकर लगता है कि हम उन्हें समझने में कुछ गलती कर रहे हैं। अच्छी बातें समाज के सामने प्रखरता से लाने के लिये उतनी ही ताकत से कोशिश करना जरुरी है। हमारी उत्सवप्रियता को ध्यान में रखकर उसी माध्यम का उपयोग करते हुये एक नया त्योहार आज समाज को देना जरुरी है और उसे हम मना सकते हैं 'क्षमादिन' राष्ट्रीय त्योहार के रूप में। इस त्योहार को किस तरह मनाया जाय इस पर कई सूचना आ सकती है, लेकिन यह त्योहार होगा व्यक्ति, समाज राष्ट्र को भी लांघकर पूरे विश्व को अपने आगोश में लेनेवाला।। दुनिया को कई अनमोल तोहफे देने वाले भारत ने "क्षमापना दिन" को राष्ट्रीय त्योहार के रूप से स्वीकार कर दुनिया को क्षमापना की ओर जाने का एक नया रास्ता दिखाना ही चाहिये। भारतीय संस्कृति दुनिया की एक प्राचीनतम संस्कृति है। इसकी कई अच्छी बातें दुनिया भर में बड़े ही प्यार से आचरण में लायी जाती है। जो तत्त्वज्ञान सर्वमान्य है, सर्वस्वीकृत है उस क्षमा के तत्त्वज्ञान को अपनाना आज के हिंसापूर्ण, द्वेषमूलक वातावरण में अत्यावश्यक बन गया है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने की आज फॅशन सा बन गया है। ऐसे समय में फिर एक बार पूर्व की ओर से, भारतीय संस्कृति की ओर से दुनिया को क्षमा का तत्त्वज्ञान देना हमारा कर्तव्य है। क्षमापना को राष्ट्रीय त्योहार रूप में मनाकर हम दुनिया के सामने एक नया आदर्श त्योहार रख सकते हैं, जो सभी के जीवन में आनंद की, सुख की, समृद्धी की बरसात कर सके, सुखमय जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दे सके।

★★★★

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार की सराहनीय पहल

– सुरेश जैन (आई.ए.एस.)
30, निशात कालोनी,
भोपाल 462003
मोबाईल 94250 10111

16तीर्थ वंदना वर्ष 7 अंक 2 अगस्त, 2016 में जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार के विस्तृत और सराहनीय समाचार और श्री कलिकुण्ड क्षेत्र, कुण्डल जिला सांगली (महाराष्ट्र) का मराठी भाषा में परिचय तथा मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित आहू पार्श्वनाथ तीर्थ के जीर्णोद्धार की जानकारी पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। अब इस पत्रिका के अन्तर्विषय और उनकी प्रस्तुति भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के उद्देश्यों और उनके कार्यान्वयन की झलक को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते है। जीर्णोद्धार योजना के जनक युगल–मुनिवर का जीर्णोद्धार के महत्व को प्रतिपादित करते प्रभावी प्रवचनों के उत्कृष्ट ढंग से प्रकाशन का स्वागत है।

2. नैनागिरि तीर्थ पर समायोजित भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण क्षेत्र में जन्में आचार्य श्री देवनंदि जी के मंगल आशीर्वाद और उनके शिष्य युगल मुनिवर–अमोघकीर्ति जी और अमरकीर्ति जी– की सफलतम प्रेरणा और समाज के साथ सतत जीवंत संवाद के परिणाम स्वरूप 15 प्राचीन जीर्ण जिनालयों का जीर्णोद्धार करने का निर्णय लिया गया है। इसके लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा श्री वीरशासन प्रभावना ट्रस्ट के सभी पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई। भारत सरकार और राज्य सरकार के वर्तमान तथा सेवानिवृत्त वरिष्ठ पुरातत्वविदों द्वारा इस निर्णय का पवित्र हृदय से स्वागत किया जा रहा है।

3- प्राचीन जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार पर केन्द्रित तीनों महर्षियों के प्रभावी उपदेशो के परिणाम स्वरूप मुम्बई में 10 जुलाई, 2016 को 210 परिवार जीर्णोद्धार अनुष्ठान में सहभागी बने और देश के 6 राज्यों के मुक्तागिरि सहित 15 प्राचीन जिनालयों के पुनरूद्धार का निर्णय लिया गया। निश्चित ही तीनों ऋषिवरों का यह असाधारण अवदान जैन संस्कृति के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जावेगा।

4- मध्यप्रदेश के दक्षिण में बैतूल जिले के गहन वन में महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित जैन तीर्थ मुक्तागिरि के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार हेतु चयन प्रशंसनीय है। बैतूल जिले में कलेक्टर के पद पर कार्यरत रहते हुए मुझे वर्ष 1992 से 1995 की अवधि में इस तीर्थ के अध्यक्ष श्री अतुल कुमार कलमकर की प्रेरणा से कुछ आधारभूत विकास कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेढ़ारी नागपुर ने भी इस तीर्थ के विकास में पूरी रूचि लेकर अनेक आधुनिक विकास कार्य कराए है। महानगरों से दूर पिछड़े भौगोलिक क्षेत्र तथा बड़े और ऊँचे पहाड़ो से घिरे आरक्षित वन में स्थित ऐसे तीर्थ के विकास के सभी सहयोगियों को हार्दिक साधुवाद।

5- वर्ष 2014 में मुम्बई में स्थापित श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट का प्रमुख उद्देश्य – प्राचीन जीर्ण शीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार – तथा आर्थिक दृष्टि से कमजोर साधर्मी बन्धुओं के उत्थान के लिए मदद करना अत्यधिक सराहनीय और अनुकरणीय है। ट्रस्ट की अध्यक्षा सौ. रूबी कीर्ति दबड़ा को हार्दिक बधाई ओर मंगलकामनाऐं। हमें विश्वास है कि वे अपने सक्षम और कुशल नेतृत्व में अधिक से अधिक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कर और साधर्मी जनों का चतुर्मुखी विकास कर देश में सर्वोच्च कीर्तिमान स्थापित करेंगी।

6- इस ट्रस्ट के द्वारा संचालित आचार्य श्री शांतिसागर गुरूकुल के लिए श्री प्रकाश जी बड़जात्या, चेन्नई द्वारा स्थापित गुरूकुल कलश की शिक्षा जगत द्वारा सर्वत्र सराहना की जा रही है। प्रत्येक आचार्य और मुनि से अपेक्षा है कि वे अपने चातुर्मास के निष्ठापन के अवसर पर गुरूकलश की स्थापना कर स्थानीय विद्यालयों के विकास में सहयोग प्रदान कराने की कृपा करें।

7- भारत वर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की वर्ष 1909 में मुम्बई में स्थापना की गई थी और इसी नगरी में ग्यारह दशाब्दियों के पश्चात् 10 जुलाई, 2016 को जीर्णोद्धार कलश स्थापना अनुष्ठान समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह को मुनि श्री अमोघकीर्ति जी और अमरकीर्ति जी तथा स्वस्तिश्री

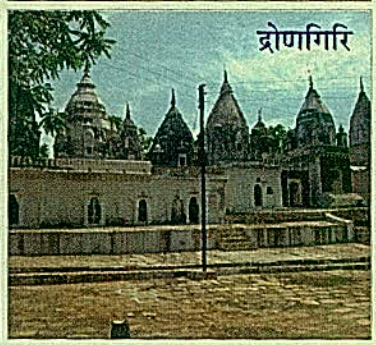

देवेन्द्र कीर्ति जी भट्टारक स्वामी, हुमचा ने अपना मंगल आशीर्वाद ही प्रदान नहीं किया अपितु इस योजना को उद्घाटन दिवस पर ही प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया। कमेटी की यशस्वी अध्यक्षा श्रीमती सरिता जी, जो इस योजना की सूत्रधार रही है, ने प्रथम जीर्णोद्धार कलश की स्थापना कर इस योजना का शुभारंभ किया और श्री अनिल जमदे को जीर्णोद्धार समिति का चेयरमेन मनोनीत किया। अतः उनके लिए हार्दिक बधाई और मंगलकामनाऐं।

8- इस अवसर पर मुनिवर अमोघकीर्ति ने घोषित किया कि जीर्णोद्धार से स्थायी और अनंत सांस्कृतिक और ऐतिहासिक लाभ प्राप्त होते है। सहस्त्रों वर्ष प्राचीन जैन मंदिर अपनी उन्नत शिखरों के माध्यम से प्राचीनतम जैन संस्कृति के आधारभूत प्रमाण विश्व के समक्ष प्रस्तुत करते है। काल कवलित पीढ़ियों का इतिहास उद्घाटित करते है। प्राचीनतम मंदिरों और मूर्तियों की भव्य कला का संरक्षण करते है। सहस्त्रों वर्ष प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास को भावी सहस्त्रों वर्षो तक भावी पीढ़ियों के लिए जीवंत बनाए रखते है।

9. मुनि श्री अमरकीर्ति जी ने अपने प्रवचन में उद्घोषित किया कि प्राचीन मंदिरों के कारण ही प्राचीन संस्कृति जीवंत है। इन मंदिरों से हमें जीवन निर्माण की प्रेरणा मिलती है। एक प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार से 100 नए मंदिर बनाने का पुण्य हमें प्राप्त होता है। जो भगवान के मंदिर की सुरक्षा करेगा, भगवान उसकी सुरक्षा करेगा। जो मंदिर का जीर्णोद्धार करेगा, भगवान उसकी आत्मा का जीर्णोद्धार ही नहीं, अपितु चतुर्मुखी विकास करेगा। हमें पूरा विश्वास है कि अरब सागर के किनारे पर बैठकर प्रसारित मुनिद्वय की यह वाणी वाष्पीकृत होकर पवित्र जल की बूँदों के रूप में पूरे भारत वर्ष में सदैव बरसती रहेगी और जैन समाज के चारों स्तंभो – मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका – को अनुकरण के लिए प्रेरित करती रहेगी।

10- यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हमारे दुर्भाग्य से कैलाश पर्वत पर भरत चक्रवर्ती द्वारा निर्मित 72 जिनालयों में से एक भी जिनालय उपलब्ध नहीं है। इस दुर्घटना से सीख लेकर हम यह प्रण करे कि वर्तमान में उपलब्ध मंदिरो के साथ भविष्य में व ऐसी दुःखद पुनरावृत्ति न हो। यदि इन तीनों मुनिवरों की जीर्णोद्धार योजना का अनुकरण हमारे अन्य आचार्य और मुनि करते हैं तो निश्चित ही जैन संस्कृति की पताका देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में युगों–युगों तक फहराती रहेगी।

11- नैनागिरि में विराजे प्रभु पारसनाथ से प्रार्थना है कि अकलंक और निकलंक के युगल की भाँति यह युवा मुनिवर–युगल जैन संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए अपने तपस्वी जीवन का सर्वश्रेष्ठ अवदान और इस योजना के वैज्ञानिक ढंग से कार्यान्वयन हेतु अपनी साधना का पूरा पुण्य प्रदान कर देश के सभी प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार कराने में सफलता प्राप्त करें।

जैन एवं हिन्दू धर्म में तीर्थ विषयक मान्यता

प्रो. डॉ. विमला जैन विमल

भारत एक धर्म प्रधान देश है यहाँ की उर्वरक भूमि में कल्पलताओं और कल्प वृक्षो सदृश्य इच्छित-विविध प्रकार के फल-फूल दिखते हैं उसी प्रकार यह महान दार्शनिक, चिन्तक तीर्थ-प्रवर्तक महापुरुषों की भी लीला भूमि रही है। इस पावन मिट्टी का कण-कण महान तपस्वी सन्तों की पद रज से तीर्थ बन गया है यहाँ की नदियों के पावन जल की बिन्दु-बिन्दु पाप विनाशिनी है, पर्वत-पर्वत की श्रंखलायें सिद्ध क्षेत्र बन चुकी हैं। यहाँ प्रागैतिहासिक काल से वैदिक और श्रमण संस्कृतियाँ साथ-साथ चलकर मानव का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। ये विचार धारायें अलग-अलग होकर भी साथ रही हैं। वैदिक विचार धारा में वेद उपनिषद प्रकाश स्तम्भ रहें हैं और ये अपौरुषेय मान्यता लिये हुये हैं और यही आगे चलकर हिन्दू धर्म कहलाया है। दूसरी विचार धारा श्रमण संस्कृति की है जो अर्हत् या तीर्थकरों के उपदेशों पर आधारित है। तीर्थकर स्वपुरुषार्थ से सर्वज्ञाता प्राप्त कर अनादि-निधन धर्म-तीर्थ प्रवर्तन करते हैं और यही जिन द्वारा उपदिष्ट धर्म जैन कहलाता है। इस प्रकार भारतीय धर्मों में जैन और हिन्दू धर्म प्रमुख है एवं विश्व के धर्मों में भी इनका प्रमुख स्थान है। इनकी प्राचीनता का आकलन असम्भव है क्योंकि एव अपौरुषेय वेद से उद्‌गमित है और दूसरा अनादि-निधन तथा सर्वज्ञ द्वारा प्रणीत है अत: दोनों ही सनातन तथा जीवन्त धर्म हैं, दोनों ने मानव समाज को सदैव से ऐहिलौकिक और पारलौकिक सुखों का मार्ग प्रशस्त किया है। इन दोनों धर्मों का गहरा सम्बन्ध है, दोनों ने एक दूसरे से लिया भी है और दिया भी है। दोनों के अनुयायी साथ-साथ रहें हैं और यह रहें हैं, एक दूसरे पर प्रहार किये हैं और सहे हैं, साथ ही एक की छाप दूसरे पर पड़ी है। दोनों समता और विषमता रखते हुये संग रहें है परन्तु दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व और विचारधारा पृथक रही है। जैन धर्म अनादि-अनन्त, नित्य, शाश्वत, स्वतंत्र, पूर्ण अहिंसक हैं, यहाँ का धर्मशास्त्र, तत्त्व दर्शन, तर्क शास्त्र, नीति विज्ञान, धार्मिक क्रिया पद्धति, आहार-विहार, मन्दिर-मूर्ति, देव, गुरु, शास्त्र तीर्थ सभी कुछ हिन्दुओं से पृथक है मौलिक है अत: जैन एवं हिन्दु धर्म में तीर्थ विषयक मान्यतायें भी भिन्न है स्वतंत्र है।

तीर्थ का शाब्दिक अर्थ एवं भावात्मक आशय- तीर्थ शब्द तृ शब्द से निष्पन्न हुआ है। व्याकरण की दृष्टि से इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है- तीर्यन्ते अनेन अस्मिन् वा। तृ प्लवन तरणयों:। पातृतुदि (3.2/7) इतिथक्। अर्थात् तृ धातु के साथ यक् प्रत्यय लगाकर तीर्थ शब्द की निष्पत्ति प्रती है। इसका अर्थ है- जिसके द्वारा अथवा जिसके आधार से तरा जाए।

अमरकोष के तृतीय काण्ड के श्लोक 86 में इस प्रकार दिया है:-

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टजलेगुरौ

मेदिनी के मतानुसार तीर्थ-जलावतरण, आगम, ऋषि, जुष्ट, जल, गुरु, क्षेत्र उपाय, स्त्री-रज, अवतार, पात्र, उपाध्यय और मंत्री आदि विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है।

नालन्दा शब्द सागर में- तीर्थ पवित्र या पुण्य स्थान को कहा है, जहाँ व्यक्ति धर्मभाव से श्रद्धा सहित दर्शन, पूजन-वंदना, स्नान, आदि को जाते हैं। इसके साथ ही 27 और शब्द दिये है जैसे-यज्ञ, अवतार, उपाध्याय, गुरु, मंत्री, ईश्वर, माता-पिता, अतिथि आदि तथा राष्ट्र की 18 सम्पतियाँ, मंत्री, पुरोहित, युवराज आदि। वास्तव में देखा जाये तो तीर्थ वह पावन शब्द है जिसके आगे नममस्तक होना मानव का नैतिक धर्म है। तीर्थ का अर्थ या आशय वह आधार है जिससे मानव भवसागर से तर (पार हो) जाये। तारने वाले घाट-माध्यम को तीर्थ माना है अत: शिष्य को गुरु, साधक को सन्त, भक्त को भगवान एवं उसकी वाणी,प्रशस्त मार्ग ही तीर्थ है।

तीर्थ विषयक मान्यता- भी इसी आधार पर विकसिक हुई है, अब हिन्दू और जैन धर्म विषयक मान्यता को अलग-अलग लेते हैं, हिन्दू शास्त्रों में तीर्थ तीन प्रकार के माने गये है:-

1. जंगम तीर्थ:- जैसे- साधु, ब्राह्मणादि।

2. मानस तीर्थ:- जैसे- सत्य, क्षमा, दया, दान, सन्तोष, ज्ञान, धर्म, ब्रह्मचर्य मधुरवाणी आदि

3. स्थावर तीर्थ:- जैसे-काशी, प्रयान, मथुरा, कृन्दावना, माया, आदि।

हिन्दू धर्म में तीर्थ शब्द तारने वाले तट के नाम में ही लिया गया है अत: साधु और ब्राह्मण पारलौकिक सुख का मार्ग प्रसन्न करते अत: पूज्य है आराध्य है उन्हें जंगमतीर्थ की मान्यता देते हुये सवांधारे त्यान दिया गया है। मानव का उत्थान मन की विशुद्धता से होता है, भावना-भाव विनाशिनी है अत: मानसतीर्थ रुप में सत्य, क्षमा, दया, दान आदि ऐसे पवित्र पारसमणि सदृश्य गुण हैं जिनके आश्रय से मनुष्य पर्याय विशुद्ध हो जाती है। मनोवैज्ञानिक परिवर्तन मानव की आत्मा को विशुद्ध कर देता है, ज्ञान द्वारा वही विवेक का अमृत पीता है वहीं धैय धर्म की धुरी बन जाता है, ब्रह्मचर्य उसे बह्म में लीनता प्रदान करता है, मधुर सम्भाषण, स्वपर को समता सुख का अमृत पिलाने लगता है और इन मानस तीर्थ की शरण में मानव विवेकशील पुरुषार्थ बन लौकिक और पारलौकिक सुख-समृद्धि पा जाता है। स्थावर तीर्थ-परिचर्चा हमें आगम के आलोक में देखनी होगी क्योंकि तीर्थ का बहु प्रचलित-रुढिवादी अर्थ इन्हीं पावन स्थावरतीर्थों के रुप में बहुमान पाये हुये है।

ब्रह्माण्ड पुराण, 4/40/91 के अनुसार हिन्दुओं में सात तीर्थ नगरियाँ मोक्ष प्रदायनी मानी गयी हैं। यथा-

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, ह्यवन्तिका: एता: पुण्यतया: प्रोक्ता: पुरीणामुक्तोत्तमा:।

अर्थात्-अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका, उज्जियनी अथवा हरिद्वार ये सात तीर्थ नगरियाँ महापुण्यवर्धक और साक्षात मोक्ष प्रदायनी हैं। ये सभी तीर्थ हिन्दुओं के आराध्य राम, कृष्ण, शिव आदि के जीवन से सम्बंधित महान घटनाओं के कारण पवित्रतम है। इनकी यात्रा-वन्दना, दर्शन-पूजन भी विशेष अवसर पर अधिक पुण्य प्रदायक होते हैं, यहाँ का कण-कण पवित्र तथा पूज्यनीय है। इसी प्रकार चार धाम भी भारत के चार

कोनों के छोर पर उपस्थित है। उत्तर में बद्रीनाथ, पूर्व में जगन्नाथ पुरी, पश्चिम में द्वारिकापुरी एवं दक्षिण में रामेश्वरम् ऐसे पावन तीर्थ है जो राष्ट्र की पूरी परधि को देशाटन द्वारा जोड़ देते है, इन चार धाम तीर्थ का दर्शन तथा विधिवत पूजन-विधान कर मानव अवश्य ही बैकुण्ठधाम का अधिकारी बन जाता है, ये क्षेत्र प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण बहुत ही मनोरम है। शिवपुराण (4/1/183/21-24) के अनुसार बारह- ज्योतिर्लिंग के नाम से तीर्थ बताये गये हैं। सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकाल, परमेश्वर, केदार, भीमशंकर, विश्वेश्वर, त्रयम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश, रामेश्वर तथा घृष्णेश इनका महात्म्य शिवपुराण आदि विशेष ग्रन्थों में विस्तृत रुप से वर्णित है। इन तीर्थों के अतिरिक्त और भी अनेक तीर्थ भारत के कोने-कोने में अवस्थित है। ऊँचे पर्वतों पर देवी महाशक्ति के मंदिर भक्तों की मनकामनायें पूर्ण करने को विशेष प्रसिद्ध है जैसे-वैष्णोदेवी, कैलादेवी, कामाख्या देवी, पुन्नागिरि आदि। हिन्दू धर्मानुसार पवित्र नदियों का स्नान भी पाप मल को धो ईश्वर में लीन कराता है अत: गंगा, त्रिवेणी, यमुना, कृष्णा कावेरी आदि नदियों में विशेष पर्वो पर स्नान-पूजन करना विशेष रुप से इष्ट होता है। हिन्दू धर्मानुसार ब्रह्मा सृष्टि रचियता, विष्णु भगवान सृष्टि के पालनहार तथा भगवान शिव सृष्टि के संहारक हैं। अत: इन त्रिदेव का पूजन-पाठ, प्रतिदिन भोग लगाना हर हिन्दू का पावन कर्तव्य है, इनकी नैतिक शिक्षायें दर्शन, कर्म काण्ड वेद से आरम्भ हुई हैं एवं बाद में उनमें अनेक विचार धारायें बृद्धिंगत होती गयी है अत: तीर्थ सम्बन्धी मान्यताओं में भी न्यूनाधिक परिवर्तन आता रहा। इह लौकिक सुख के लिये महाशक्ति देवी रुप को विशेष महत्व दिया जाता है वही पारलौकिक सुख के लिये चार धाम एवं ज्योर्तिलिंग की तीर्थ वन्दना प्रमुख है। इन सभी तीर्थ क्षेत्रों पर प्राय: पण्डे, पुजारी, ब्राह्मण आदि यजमान से विधि-विधान पूर्वक पूजा कराते हैं। मान्यतानुसार भक्त ब्राह्मण पण्डों के माध्यम से कर्म-काण्ड, पूजा-अर्चना करके तीर्थाटन का पुण्य फल पाने का अधिकारी होता है।

जैन धर्म में तीर्थ विषयक मान्यता हिन्दू धर्म की अपेक्षा बिल्कुल अलग है। यद्यपि जैन तीर्थ भी परम पावन क्षेत्र ही है तथापि इनका द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सभी दृष्टियों से अर्थ और आशय भिन्न है। इनकी मान्यता स्वयं में मौलिकता लिये हुये है। जैन भी पूर्ण श्रद्धा-आस्था भाव पूर्वक अपने तीर्थों की अभिवन्दना करते हैं। उनका विश्वास है कि तीर्थ वन्दना से पापों की निवृत्ति और धर्म में प्रवृत्ति बढती है। कर्मो का क्षय व पुण्य का संचय होता है और परम्परा से यह मुक्ति लाभ का कारण होता है। इसी विश्वास के आधार पर वृद्धजन और महिलायें भी तीर्थराज सम्मेद शिखर और गिरनार जैसे दुरुह पर्वतीय क्षेत्रों पर प्रभु नाम संकीर्तन करते हुये चढ जाते हैं। आचार्य जिन सेन ने आदिपुराण में लिखा है-

संसाराब्धेरपारस्यतरणेतीर्थमिष्यते।

चेष्टितं जिननाथानां तस्योत्तिस्तीर्थ संकथा।।

अर्थात जो इस अपार संसार समुद्र से पार करे उसे तीर्थ कहते है। ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र भगवान का चरित्र ही हो सकता है, अत: उसके कथन करने को तीर्थख्यान कहते है।

यहाँ जिनेन्द्र भगवान के चरित्र को तीर्थ कहा है। आ. समन्तभद्र जी ने जिनेन्द्र देव के शासन को सर्वोदय तीर्थ कहा है। उन्होंने प्राणी, भक्त का कल्याण करने वाली दिव्य ध्वनि को तीर्थ के अर्थ में लिया है। यह तीर्थ परमागम रुप अर्थात जिनागम (श्रुतदेवता) हैं। आ. समन्तभद्र जी ने तीर्थ को जन्म-मरण रुप समुद्र में डूबते हुये प्राणियों के लिये प्रमुख तारण पथ (पार होने का उपाय) बताया है। मुनि श्री पुष्पदत्त-भूतबलि प्रणीत षट्खण्डागम (भाग8पृ. सं. 91) में तीर्थंकर को धर्मतीर्थ का कर्ता कहा है। आदि पुराण में प्रथम दानदाता श्रेयांस कुमार को दानतीर्थ का कर्ता कहा है। आदि पुराण में (2/39) मोक्ष प्राप्ति के उपाय भूत सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान स, सम्यक चारित्र को तीर्थ कहा है। आवश्यक नियुक्ति में चार्तुसंघ (श्रमण-श्रावक-श्राविका) अर्थात चर्तुविधि संघ को तीर्थ माना है। इनमें गणधरों और मुख्य गणधर को मुख्य तीर्थ कहा है। कल्प सूत्र में भी इसी बात का समर्थन किया गया है। उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि तीर्थ तारने वाले भाव से जुड़ा हैं अ... संसार सागर से तरने में जो भी सहयोगी युक्ति है वह मुख्य रुप से तीर्थ की श्रेणी में आती है। जिसके द्वारा मानव अपनी आत्मा का कल्याण करने की प्रेरणा प्राप्त कर सके, मोक्ष मार्ग में प्रवृत्त हो स्वयं कि शिवत्व का अधिकारी बना सके, सत्पुरुषार्थ को अर्न्तमन से लग सके बाह्य व्यवहार में अपने श्रम, दान, समय को पुण्य योग में लगाये उसमें सहयोगी आधार वस्तु या भाव को तीर्थ कहा है। वास्तविक तीर्थ तो स्वयं की आत्मा है, आत्मधर्म साधना ही तो तीर्थ वन्दना है। तीर्थ और क्षेत्र मंगल:- वर्तमान में तीर्थ का बहुप्रचलित अर्थ तीर्थक्षेत्र के लिये मान्यता प्राप्त है। जैनाचार्यों ने तीर्थ के स्थान पर क्षेत्र मंगल शब्द का प्रयोग किया है। षटखण्डागम (प्र. खण्ड पृ. सं. 28) में क्षेत्र मंगल के सम्बन्ध में परिचर्चा है। भाव यही है जहाँ से तीर्थंकर सिद्धत्व को प्राप्त करते है, सर्वज्ञता की उपलब्धि करते है, सर्वस्व त्याग जैनेश्वरी दीक्षा धारण करते है एवं गर्भ जन्म कल्याणक महोत्सव मनाये जाते है, वे स्थान मंगल क्षेत्र, पावन और पूज्य हो मांगल्य स्वरुप ले लेते हैं। तिलोयपणात्ती (प्र. अधि. गाथा 2 24) में कल्याणक क्षेत्रों को क्षेत्र मंगल की संज्ञा दी है।

गोम्मटसार में:-

क्षेत्रमंगलपूर्जयन्तादिक मर्हदादीनाम्।

कहकर इसी आशय का समर्थन किया है। यद्यपि तीर्थ शब्द के इतने अधिक अर्थ लगाये गये है कि, तीर्थ क्षेत्र अर्थ समझना कठिन लगता है परन्तु वर्तमान में तीर्थ शब्द तथा भाव इतना व्यापक व सबके व्यवहार मे आने वाला बहुप्रचलित रुढि बन चुका है कि कहीं दुरुहता रही ही नहीं है। वैसे भी तीर्थ या तट शब्द पार करने में साधक है, यह भाव स्पष्ट कर देता है कि तारने वाले तीर्थंकर, तीर्थ प्रवर्तन कर तीर्थ स्थापित नहीं करेगें तो और कौन करेगा? अनेक युक्तियाँ विधि-विधान, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव जो संसार सिन्धु से तारने में सहयोगी है वही तो तीर्थ है। इन्हीं में एक साधन तीर्थ भूमियाँ भी हैं। तीर्थ के साथ भूमि जोडते ही क्षेत्र मंगल भाव स्पष्ट हो जाता है। इस प्रकार तीर्थ भूमियाँ भी हैं। तीर्थ के साथ भूमि जोडते ही क्षेत्र मंगल भाव स्पष्ट हो जाता है।

इस प्रकार तीर्थों की संरचना की दृष्टि से तीर्थ भूमि या क्षेत्र मंगल को मात्र तीर्थ कहना बहुप्रचलित एवं रुढ ही नहीं सर्वमान्य है जो जन-जन की जवान पर रहता है तथा मन मस्तिष्क में एक ही भाव उत्पन्न करता है। ये तीर्थ भूमियाँ सात्विक ऊर्जा का अक्षय स्रोत है जिनसे मानव पाप से निवृत्ति और धर्म-आध्यात्म से प्रवृत्ति को प्रेरित होता है ये मंगल भूमियाँ महापुरुषों के संसर्ग से पवित्र हो चुकी हैं, यही साक्षात महापुरुष रहें हैं और वर्तमान में भी साधु सन्त यहाँ रह तप साधना, ज्ञान-ध्यान में रत हैं। यह पावन भूमियाँ उसी प्रकार ये स्थान विशेष भी सात्विक ऊर्जा से भर गये हैं और तारने वाले तीर्थ बन गये हैं तभी तो सम्मेद शिखर की उतंग श्रंखलायें कोटि-कोटि मुनिराजों की सिद्धत्व भूमि बन चुकी हैं और पूजन-वन्दना करने वाले भक्तों को लाखो-करोडों उपवासों का पुण्य लाभ देने में सहयोगी होती हैं।

मूलत: पृथ्वी पूज्य या अपूज्य नहीं होती, उसमें पूज्यता महापुरुषों के संसर्ग के कारण आती है, पूज्य तो वस्तुत: महापुरूषों के गुण होतें हैं, वे गुण (आत्मा) जिस शरीर में रहते हैं वह शरीर भी पूज्य और पवित्र बन जाता है, संसार उस शरीर की पूजा करके ही गुणों की पूजा करता है। जैन दर्शन में गुण विशेष को ही महत्व दिया जाता है, इसीलिए तो जैनों के अनादि-निधन नवकार मंत्र (णमोकार मंत्र) में व्यक्ति विशेष को नहीं गुण विशेष के धारक अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधुओं को नमस्कार किया गया है। इसी प्रकार महापुरुष बीतराग प्रभु तीर्थकर अथवा मुनिराज जिस भूमि खण्ड पर तपस्या रत हो ध्यानस्थ खड़े होते हैं कार्य क्षय कर सिद्धत्व को प्राप्त करते है वे परम पावन सिद्धक्षेत्र बन जाते हैं, उनके भक्त वे चाहे देव हो या मनुष्य उन मोक्ष मार्ग के प्रर्वतको के उपकार को सतत स्मृति में बनाये रखने को स्मारक बना देते हैं। संसार की सम्पूर्ण तीर्थ भूमियाँ या तीर्थक्षेत्रों की संरचना में भक्तों की महापुरुषों के प्रति यह कृतज्ञता की भावना ही मूल कारण है। इस आधार पर जैन तीर्थों के भेद किये गये हैं। ये मुख्यत: तीन भागों में विभक्त है:-

1. सिद्धभूमि या सिद्ध क्षेत्र- ये निर्वाण कल्याणक भूमियाँ हैं।

2. मंगलक्षेत्र- यहाँ तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणकोत्सव मनाये गये हैं।

3. अतिशय क्षेत्र- यहाँ जिनमूर्ति का विशेष चमत्कार प्रसिद्ध होता है। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक क्षेत्र तथा कला तीर्थ के रुप में विशेष कलात्मक प्रतिमा या मंदिर होने के कारण वे स्थान तीर्थ बन जाते हैं।

1. सिद्ध क्षेत्र:-

सिद्ध क्षेत्रे महातीर्थे पुराण पुरुषाश्रिते।
कल्याण कलिते पुण्ये ध्यान सिद्धि: प्रजायते।।
आ. शुभचन्द्र कृत ज्ञानाणव

अर्थात सिद्धक्षेत्र महान तीर्थ होते हैं, यहाँ पर महान भव्यात्मायें निर्वाण को प्राप्त करती हैं। ये क्षेत्र कल्याण दायक तथा पुण्य वर्धक होते हैं यहाँ आकर यदि ध्यान किया जाये तो ध्यान की सिद्धि हो जाती है। जिसको ध्यान सिद्धि हो गयी, उसमें आत्म-सिद्धि होने में विलम्ब नहीं लगता। तीर्थ-भूमियाँ का महात्म्य वस्तुत: यही है कि वहाँ आकर मनुष्यों की प्रवृत्ति संसार की चिन्ताओं से मुक्त हो उन महापुरुषों की भक्ति में रम जाती है, आत्म कल्याण की ओर उन्मुख हो जाती है। इसी मान्यता और भावना से वशीभूत हो मनुष्य आत्मोद्धार हेतु इन तीर्थो की वन्दना हेतु इन तीर्थो की वन्दना हेतु जातें हैं। घर पर मनुष्य को नाना प्रकार की संसारिक चिन्तायें और अकुलतायें लगी रहती है अत: वह इन सबसे मुक्त हो आत्म कल्याण के लिये निराकुल अवकाश निकाल तीर्थ स्थान, जो प्रशान्त और सात्विक ऊर्जा से भरे हुये हैं, जाकर भक्ति भाव से पूजन-वन्दन करने में अपना अहोभाग्य समझता है। तीर्थ भूमियों के मार्ग की रज इतनी पवित्र होती है कि उसके स्पर्श से भावों में विशुद्धि आती है और मनुष्य रज रहित अर्थात् कर्म मल से रहित हो जाता है। तीर्थों पर भ्रमण करने अर्थात तीर्थ वन्दना से संसार का भम्रण छूट जाता है। तीर्थ पर धन व्यय (दानादि) करने से अविनाशी सम्पदा प्राप्त होती है एवं जो तीर्थ पर जाकर अपने आराध्य की शरण ग्रहण करता है वह भगवान के मार्ग को जीवन में उतार लेता है, जो उन सिद्ध प्रभु की पूजा करता है स्वयं जगत पूज्य बन जाता है अर्थात् कुछ ही भवों में सिद्ध पद प्राप्त कर लेता है। तीर्थराज सम्मेद शिखर की वन्दना के विषय में कहा गया है:-

भाव साहित बन्दे जो कोई, ताहि नरक-पशु गति नहि होई

इस प्रकार सिद्ध भूमियों की वन्दना पापों का क्षय और पुण्य का संचय करा अधो गति से छुटकारा दिलाती हैं, तीर्थराज की वन्दना करने वाला भव्य अधिक से अधिक 49 भव धारण करता है यानी परम्परा से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त करता है। जैन धर्मानुसार ये सिद्ध भूमियाँ, अनेक है, मुख्य पाँच है, कैलाश, चम्पापुर, पावापुर ऊर्जयन्त (गिरनार) और सम्मेद शिखर। प्राकृत निर्वाण काण्ड (भक्ति) में कुन्दकुन्दाचार्य ने 19 निर्वाण क्षेत्रों की वन्दना की है जबकि संस्कृत निर्वाण भक्ति में आ. पूज्य वाद ने 25 सिद्ध भूमियों की भक्ति की है ये दो भक्ति पाठ 16 वीं 17 वीं शताब्दी के मध्य के माने गये है। दि. जैन तीर्थ क्षेत्र निर्देशिका में 3 सिद्धक्षेत्रों का विवरण दिया है। ये सभी तीर्थ भूमियाँ तीर्थकरों के अतिरिक्त अनन्तानन्त सिद्धात्माओं की सिद्ध भूमि रहीं हैं। अत: मान्यतानुसार अत्याधिक पावन और परम पूज्य है। तीर्थ राज सम्मेद शिखर को तो अनादि-निधन शाश्वत तीर्थ की संज्ञा दी है, इसी लिये उसका महत्व विशेष है।

2. मंगल क्षेत्र- वह तीर्थ भूमियाँ हैं जहाँ तीर्थकरों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकोत्सव मनायें गये हो। पुण्य फला अरिहन्ता के आनुसार तीर्थंकर या अरिहन्त पर्याय को प्राप्त करना जन्म–जन्मान्तर के पुण्य कर्मों के योग का फल होता है। अत: तीर्थंकर बनने वाली भव्यात्मा अतिशय पुण्य के कारण अपने जन्म से पूर्व ही प्रभावी हो जाती है फल स्वरुप जहाँ उसे गर्भ में आना है उस क्षेत्र की कायापलट जाती है जन्म से 15 माह पूर्व वहाँ दिन में तीन बार अगनिनत रत्नों की वृष्टि होती है, पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण हो जाती है वृक्षों-लताओं पर बिना ऋतु के भी प्रचुर मात्रा में फल-फूल फलने लगते हैं दूर-दूर तक ईति-भीति, आधि-व्याधि, दैहिक, दैविक, भौतिक, ताप अपने प्रभाव से शून्य हो जाते हैं, सुख-शान्ति, समता-ममता जैसे वहाँ स्थायित्व पा लेती हैं वह मंगल भूमि अत्याधिक रमणीक और सुखद हो जाती है अत:

तीर्थंकर के गर्भ कल्याणक व जन्म कल्याणक उत्सव को दिव्य विभूतियों के साथ सम्पन्न किया जाता है अत: ये स्थान पावन मंगल तीर्थ बन युग-युगों तक मानव को सुखानुभूमि कराते रहते हैं। ऐसी ही मंगल भूमि है अयोध्या यहाँ पाँच तीर्थंकरों ने जन्म लिया है, हस्तिनापुर में तीन तीर्थंकर इसी तरह अन्यान्य तीर्थंकरों ने जहाँ बाल-लीलायें की हैं, शासन सत्ता चलाई है वे आज भी सुखद सौन्दर्य का आभास कराते हैं। इसी प्रकार वैराग्य होने पर दीक्षा कल्याणक क्षेत्र एवं ध्यान की फलश्रुति सर्वज्ञता की उपलब्धि होने वाले स्थान मंगल तीर्थ हैं, इनकी संख्या 19 है, मान्यतानुसार इन क्षेत्रों पर पूजन-विधान करने से मांगल्य की प्राप्ति होती है. मिथिला पुरी, भद्रिकापुरी, शौरीपुर आदि ऐसे ही मंगल क्षेत्र है।

3. अतिशय क्षेत्र:- जहाँ किसी मंदिर में या मूर्ति में कोई विशेष चमत्कार होता है तो वह क्षेत्र अतिशय के कारण प्रसिद्धि पा लेता है। जैसे श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर श्री महावीर जी की मूर्ति एक टीले के गर्भ में छिपी पड़ी थी, वहाँ एक गाय प्रतिदिन आ अपना दूध झता जाती थी, ग्वाला व्यथित था आखिल गाय का दूध जाता कहाँ है? उसने छिपकर गाय का पीछा किया तो वह आश्चर्य चकित हो गया, गाय स्वयं ही वहाँ खड़ी दूध झरा रही थी। खुदाई हुई और वहां मूर्ति निकली। कालान्तर में और भी अनेक चमत्कार हुये और हो रहे हैं, अत: ऐसे स्थानों को न तो रमणीक बनने में देर लगती है और न धन-जन की कमी होती है, चमत्कार को नमस्कार की युक्ति यहाँ फलित है। जैन तीर्थों में ऐसे अनगिनत अतिशय क्षेत्र है जहाँ लोगों की मनोकामनायें पूर्ण होती है, यहाँ लोग रोते हुये आते है और हँसते हुये जाते हैं प्रेय की प्राप्ति का साधन ये तीर्थ आर्कषण का केन्द्र बने रहते हैं। निजारा जी, रानीला, कचनेर फिरोजाबाद आदि ऐसे अनगिनत अतिशय क्षेत्र है।

ऐतिहासिक क्षेत्र अपने पुरातात्विक महत्त्व, प्रागैतिहासिक अभिलेखों गुफा मंदिरों आदि के कारण विशेष महत्वपूर्ण होते है। यद्यपि जैनों ने अपने ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के क्षेत्रों को विशेष संरक्षण कभी प्रदान नहीं किया तथापि वे इतिहास के पन्नों में धूमिल ही सही, पड़े हुये है।

कला तीर्थ:- के रुप के वे क्षेत्र आते है जो अपने कलात्मक वैभव के कारण विश्व में विख्यात हैं जैसे श्रवण बेलगोला की विश्व का आश्चर्य गौमटेश्वर बाहुबलि की 57 विशाल-विशद प्रतिमा तथा मांगीतुंगी में 108 उतग श्री ऋषभदे की प्रतिमा और भी अनेक स्थापत्य एवं मूर्ति कला में अद्वितीय कलात्मक तीर्थ क्षेत्र अपने पुरा वैभव की जीर्ण-शीर्ण स्थिति में भारत के कोने-कोने में बिखरे पड़े है।

तीर्थ विषयक मान्यता के अनुसार जैनों का ध्येय भी तीर्थ यात्रा से आत्मविशुद्धि तथा देशाटन से ज्ञान वर्धन और मनरंजन ही होता है हाँ, अतिशय क्षेत्रों पर मनोकामना की पूर्ति भी विशेष उद्देश्य बन जाता है। जबकि तीर्थ वन्दना निष्काम भक्ति से करने का ही विधि-विधान बताया गया है।

तीर्थ वन्दना का माहात्म्य अचिन्त्य है जैन एवं हिन्दु धर्म दोनों ही इस मान्यता को मानते हैं। सभी धर्म प्रेमी अपने आराध्य की पूजन-भक्ति तीर्थों पर जाकर अवश्य करना चाहते हैं। यह सत्य है कि द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का प्रभाव हर स्थान को दूसरे स्थान से पृथक कर देता है और ये तीर्थ भूमियाँ भी महापुरुषों के संसर्ग से विशेष सात्विक शक्ति का श्रोत बन गयी हैं। ये तीर्थ हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं धार्मिक ऊर्जा के केन्द्र हैं। अत्यन्त प्राचीन काल से भक्तजन अपने आराध्यों के प्रति नतमस्तक हो पूजन-स्तवन कर स्वयं को धन्य और स्वात्म कल्याण को प्रेरित होते रहें हैं। तीर्थ संसार सागर को पार करने के लिये नौका सदृश्य है, अत: तीर्थ वन्दना सदैव ही समीचीन भक्ति भावना तथ्या द्रव्य, क्षेत्र, काल की युपयुक्तता के साथ करनी चाहिये। ये पावन क्षेत्र महापुरुषों की तप: ऊर्जा और बोध विज्ञान की तरंगों से अभिभूत है अत: आगन्तुकों के पाप पलायन और पुण्यार्जन में सहयोग होते हैं, उनका देशाटन से मन रंजन और ज्ञान वर्धन तो होता ही है अपने धर्म, संस्कृति के साथ उन पूर्वजों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित होती है जिन्होंने इन स्थानों को अक्षुण्य बनाये रखने तथा रमणीक और आकर्षक बनाने के साथ सर्व सुलभ कराने में अपना तन-मन-धन, श्रम प्रचुर मात्रा में अर्पित किया है। तीर्थों पर आकर जो भावनाओं में उत्कृष्टता आती है, वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है और यह दृव्यगत विशेषता क्षेत्र कृत प्रभाव और काल कृत परिवर्तन के कारण ही बलवती होती है, क्षेत्रो का वातावरण बदल जाता है, जैसे सूर्य पर जब राहु का प्रकोप होता है उसका प्रचण्ड प्रकाश भी धूमिल हो जाता है उसी प्रकार ये तीर्थ क्षेत्र सात्विक ऊर्जा के अक्षय श्रोत होते हुये भी मानसिक वृत्ति के प्रदूषण के कारण पर्यावरण विशुद्धि खो रहे हैं। वर्तमान में पर्वतों की पावनता खतरे में है। पवित्रम तीर्थ सरिताओं का जल असहनीय ढंग से दूषित हो रहा है। प्राय: तीर्थो पर अतिक्रमण हो रहे हैं और हम भाई-भाई अखाड़े में खड़े ताल ठोक रहे है। प्राय: तीर्थो पर झगड़े सत्ता के लिये ही हो रहे हैं, कहीं गिरनार तो कहीं केशरिया जी अतिक्रमण का शिकार बन, खून-खराबा और मनो मालिन्य बढा रहे हैं। हम हिन्दू-हिन्दू लड़ रहे हैं, जैन-जैन लड़ रहे है और हिन्दू और जैन तो लड़ ही रहे है। हमारी जन्मभूमि एक है, हम एक ही माटी के पुतले, धर्म-तीर्थों के प्रति आस्था भी एक जैसी ही है और यह भी शाश्वत सत्य है कि सत्य की ही अन्त में विजय होती है, अत: हम अतिक्रमण और एक-दूसरे को नष्ट करने की भावना को सदैव-सदैव के लिये त्याग दें। जैन और हिन्दु धर्म में तीर्थ विषयक मान्यता पर इतनी विषद चर्चा-परिचर्चा के बाद इस बात का अवश्य ध्यान रखे कि हम एक-दूसरे के तीर्थों पर अतिक्रमण नहीं करेंगे न समीचीन विकास में हस्तक्षेप; हम सहयोग के साथ तीर्थों के विकास, जीर्णोद्धार, संरक्षण, सम्वर्धन कर सात्विक उर्जा का अक्षय श्रोत बनाये रखेगें।

तीर्थ हमारे धर्म प्राण है, नित प्रति वन्दन करना है,
सात्विक ऊर्जा श्रोत यहाँ है, सम्वर्धन शुचि करना है।
हो अतिक्रमण सहन हो कैसे? संरक्षण सुधि करना है,
विमल भक्ति तीर्थों के प्रति है, अभीवन्दन नित करना है।

ACTIVITIES OF BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE – SOUTHERN ANCHAL (TAMILNADU /PONDICHERRY / ANDHRA PRADESH /KERALA)

1. Enrolment of new life members from south zone -----70 persons.

2. Our south zone president Shri Kamal Tholia has upgraded himself as Sanmaniya member by paying a sum of Rs. One lakh.

3. Ahimsa walk is conducted every first week of the month to visit ancient Jain temples and caves by members of Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee-south zone and members of the community of Tamilnadu. Many idols were found during the walk and about 120 idols of Tirthankaras were recovered from various places in Tamilnadu.

We have built around 9 shelters and small temples to safeguard these idols. We are very grateful to Shri Sridhar Nainar from Pondicherry who is chief architect of the Ahimsa walk Mr.Chinnappa Jain and their team is doing a great job by taking full responsibility of construction of these temples and shelters.

We are also awaiting donors for many leftover idols which have to be safeguarded by constructing small shelter or temples. We request entire Jain community to come forward and donate liberally for the cause. Amount can be directly deposited in to the following account to enable us to achieve our goal of installing these idols by constructing small temples or shelters.

Bharatvarsiya Digamber Jain Tirth Kshetra Committee,
TNSC BANK LTD. Account no. 712485849
Shenoy Nagar Branch, Chennai
IFSC CODE :TNSC000001

4. A temple at Erlachary was recently completed and panchkalyan pooja was performed on 28-08-2016. The amount was donated by Shri Padam Chand Mahendra Kumar Dhakra and family, Chennai. Through Bharat Varshiya Digamber Jain TirthKshetra committee – South zone, the staphna of Bhagwan Mahaveer has held in a grand manner which was attended by more than 200 Jains from Vellore, Kanchipuram, Arni and Chennai. The above mentioned abandoned Jain Tirthankar got shelter which was worshiped centuries ago by our forefathers.

5. Following temples are renovated with support of members of Digamber Jain community from Tamilnadu through Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee-south zone. A total of Rs 7,40,000/- was spent on the following temples:

a) Veeramadi Jain temple— Rs.65000/-
b) Elangadu Jain temple — Rs.25000/-
c) Annamangalam Jain temple— Rs.25000/-
d) Aylawadi Jain temple---- Rs.25000/-
e) Kizh Vailamoor Jain temple— Rs.6,00,000/-

6. We have undertaken construction of muni / tyagi niwas at following places.

HOSUR (BANGALORE-CHENNAI HIGHWAY)—amount paid till now Rs.2,50,000/- A muni niwas is being constructed at Hosur on Bangalore Chennai highway. This is very strategic location as every muni sangh who comes to visit Tamilnadu have to come through this route. The total cost of the project is Rs.18 lacs. It has been funded by local Jain community to the tune of Rs.12 lacs and Rs.250000/- has been contributed by members of Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra Committee, Chennai. A request letter for balance amount has been sent to the national president, Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra Committee, Mumbai.

7.Enathur (Chennai-Kancheepuram highway)

A muni niwas on Chennai-Kancheepuram highway is planned at Enathur. The funding for this project is sponsored by our south zone president Shri Kamal ji Tholia (Shrimati Nathi Devi Kamalji Nishi ji Jain-Tholia and family) to the tune of Rs.4.5 lacs. This is also situated in a very strategic location as every muni sang who comes to visit Tamilnadu have to come through this route.

8. CONSTRUCTION OF YATRI NIWAS AT PONNURMALAI

A 27 room guest house is planned at Ponnurmalai, tapo bhumi of Acharya Kund Kund. construction of the same is in full swing and expected to complete by December 2016. The total estimated cost of the project is Rs.1.5 crores. The commitment is already taken for Rs. 80 lacs. The project is

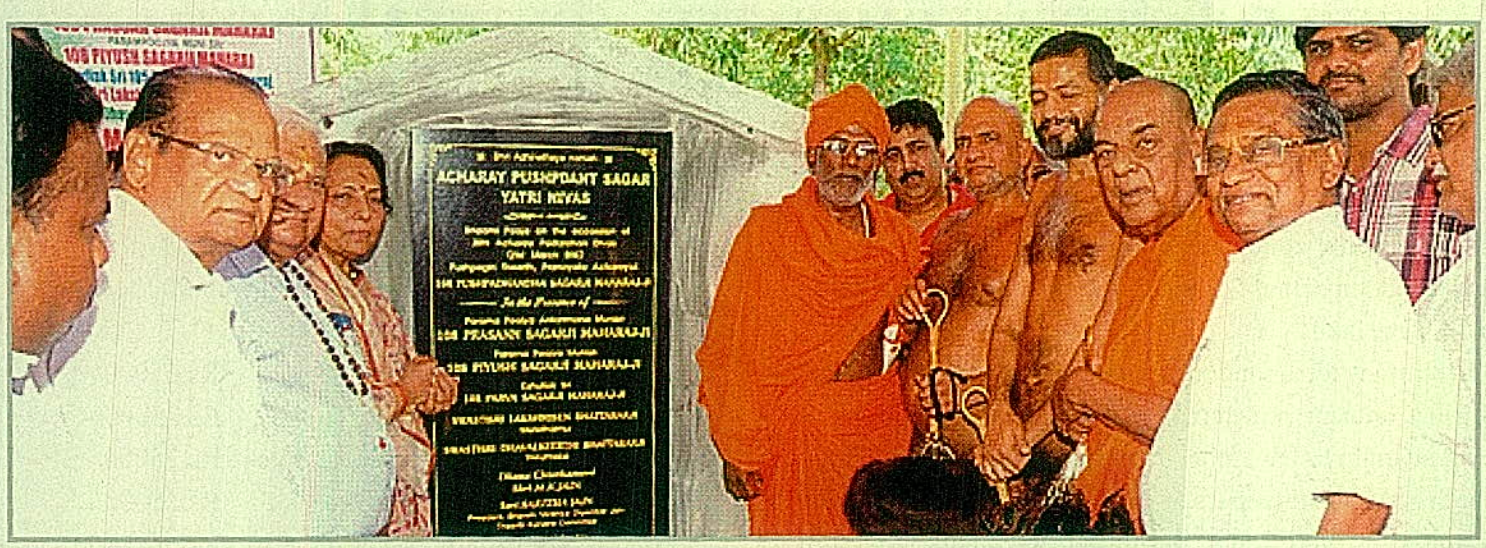

Bhojanshala at Melchittamur

Arihantgiri

Erlachery

Erlachery

Erlachery

Mel Sithamoor Ezuperum Vizha

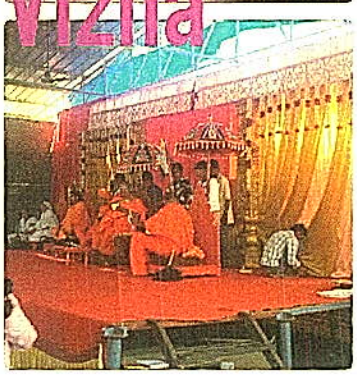

Tyagi Niwas,
Hosur

yatriniwas at ponnur

supported by trustees of Ponnurmalai, members of Tirth Kshetra committee, Tamilnadu and Pondicherry and other members of Jain community. We have sent request of balance fund requirement to the national president of Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee, Mumbai.

9. A bhojanshala was constructed at melchitamur with the funds received from Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee- Mumbai to the tune of Rs 10 lacs.

10. One room is constructed at Arihant giri with funds (Rs.2.5 lacs) received from Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee, Mumbai

11. A yatri nivas was constructed at thirunarunkundram with rs.5 lacs received from Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee,mumbai

12. Under guidance from Yugal muniraj 108 Shri Amar Kirthi ji maharaj and 108 Shri Amogh kirthi ji maharaj, renovation of following temples are sanctioned by veer prabhavana trust,mumbai through Tirth Kshetra committee.

1.kizh vailamoor
2. vazhpandhal
3. essa kolathur
4. krishnapuram (gingee)

13. We are undertaking renovation of Shri 1008 Bhagwan Mahaveer Jain temple ,Marakkonam village ,near Chetpet , Tiruvanamalai dist- Tamilnadu. the temple is in a very bad condition and requires immediate attention. there are around 20 Digamber Jain families living in nearby villages. This temple has reference in appandi nathar ula of ancient tamil Jain literature. We are getting this sponsor from vikas anuradha kasliwal(S kumars, mumbai).

14. We have submitted applications for the following temples to our national president of Bharatvarshiya Digamber Jain Tirth Kshetra committee, Mumbai and once we receive sanction of funds the following temples will be taken care in the near future

1. Bhagwan 1008 Shri Shantinath Jinalayam , Piloor
2. 1008 Shri Adinath Bhagwan Jinalayam, Saduperipalayam
3. Bhagwan 1008 Shri Shantinath Swami Jain trust, Somasipada
4. Bhagwan 1008 Shri Neminath Bhagwan Digamber Jain temple, Renderipet

15. We have got sponsor for 3 more abondoned statues for which shelters will be built. The donors for the above are Shrimati Suryakanta ji ,Kolkata and Shrimati Ranjanaji Delhi (Rai Bahadur Chunni lal and sons, Dimapur).

We are thankful to all the donors who have contributed for the good cause of jeenordar.

16 . FLOOD RELIEF DISTRIBUTION DONE ON 08-12-2015

Srimati Sarita MK Jain, Chennai, All India President of Bharatvarshiya Digamber Jain Teerth Kshetra Committee, along with Shri Kamal Kumar Jain (Tholia), President, Southern Region (Tamilnadu, Kerala, Andhra Pradesh and Pondicherry) and committee members totally distributed 1,000 sets of utensils consisting of 16 items in a plastic bucket in four districts of Tamilnadu and Pondicherry.

The distribution was done to 1,000 families to the tune of Rs.6,56,000/- and was done on behalf of "Bharat Varshiya Digamber Jain Teerth Kshetra Committee, Mumbai" along with honourable Minister Mr. Ramana on 8th December 2015 in and around Tiruvallur and Arkonam . We had coverage from Jaya TV / Polimer TV and Dinamani News Paper.

Secondly we have also sent 500 tarpaulins to Pondicherry and Cuddalore which was distributed by our community members. This stands to the tune of Rs.1,91,500/-.

Finally we have also distributed water packets to the tune of Rs.7,950/- in Chennai. The total amount of distribution was around Rs.8,55,450/-.

Hence, the total amount of distribution on behalf "Bharat Varshiya Digamber Jain Teerth Kshetra community, Mumbai" stands to tune of Rs.8,55,450/- (Rupees Eight Lakh Fifty Five Thousand Four hundred and fifty only)

President (Southern zone) — Kamal Tholia

secretary (southern zone) — Dinesh Sethi

Rediscovery of Jainism in Tamilnadu- A kaleidoscopic picture

The forgotten history of the sacred jaina land- brought to you in a series

Part -2- Dawn of Jainism in Tamil Land

Dr.Kanaka.Ajithadoss Jain and P.RajendraPrasad Jain

Even today Samanam (Jainism in Tamil land) is a little known or unknown religious entity and "Samanars" (the native Tamil jains) are the invisible, voiceless community for majority of Tamil population and also for Jains living outside the borders of Tamilnadu as well those who migrated from outside and settled in Tamilnadu either recently or several decades earlier. There are two reasons for presenting the story of Jainism in Tamilnadu with reference to native Jains called Samanars ;

1. With the recent discovery by 'Ahimsa walk' – an organisation formed to discover, and protect the abandoned Thirthankara sculptures jaina relics, monuments, in many villages towns, hillocks more and more individuals , students, archaeologists, historians, linguists, epigraphists, travellers Tamil writers ,journalists show keen interest in knowing about various phases and facets of Jainism in Tamilnadu particularly its origin here in Tamil land ;

2. The history of native Jains of Tamilnadu and their rich contributions to Tamil language, literature, Culture and development of script has to be retold from time to time not only to jains outside the borders of Tamil nadu but also those who settled here as they know very little or nothing about Tamil jains and the ancientness of their history spanning several thousands of years; **the dawn of civilization is the date of birth of Jainism in Tamilnadu;** the glorious history of Tamil jains of bygone era is a mystery for many of them; this will clearly show , bring out the unique character and value of the ancient culture and civilization of the Tamil land that followed the ideal of Ahimsa as preached by the Thirthankaras.

Previously a brief outline was provided to understand the antiquity of Jainism in Tamil land. Now let us go in to the origin of Jainism in Tami land;

Migration theory of Jainism into the South and particularly Tamil land

Is Jainism alien to Tamil land?

Was the arrival from Karnataka, of Visakacharya a disciple of Srutha Kevali Acharya Bhadrabahu, with a large followers into Tamilnadu responsible for the introduction of Jainism in Tamil country?

Was it the initial factor?

Did Jainism enter into Tamilnadu from Andhra?

Did it originate from two frontiers - Karnataka and Andhra?

Is Jainism as older as the dawn of civilisation in Tamil land?

To trace the antiquity of Jainism in Tamil land one has to seek the evidence/s both within the borders of Tamilnadu as well outside it; the sources are diverse which include ancient inscriptions, literature, chronicles of history, and puranas etc.;

Jainism in Sravanabelagola (Karnataka) at the time of arrival of Acharya Bhadrabahu

Jainism was a popular religion in Sravanabelgola at the time of arrival of Sruthakevali Acharya Bhadrabahu; the arrival of that great Jaina ascetic from North is an unassailable fact attested by several inscriptions in Sravanabelagola, and Sanskrit literary works such as "Brahatkathacosa" of Harisena (931CE), "Bhadrabhahucharitha Munivamsabyuthya" of Sidhdhantha (1680CE) and Kannada work "Rajavali saritham" of Devachandra (1833CE))

Several oriental as well the western scholars are of the opinion that Jaina religion was introduced into Tamilnadu after the arrival of Jain sangha into Sravanabelagola (Karnataka) under the leadership of the great Jaina Acharya Bhadrabahu (317- 297BCE) along with thousands of followers and ascetics, the prominent ones were the ascetic Visakacharya and the ascetic turned emperor Chandragupta (322- 298 BCE) ;

The question is this : Did Jaina religion already exist in Sravanabelagola- Karnataka at the time of arrival of the highly revered Struthakevali Acharya Badhra bahu ?

The answer is 'yes'; this conclusion is based on the following valid assumptions:

Srutha kevali Acharya Bhadrabahu Sangha consisting of several thousands of ascetics would not venture to enter into an alien land if they were not sure of respectful welcome based on agamic traditions and sympathetic reverential support by the ruler and sravakas (house holders who know all about entertaining Jaina ascetics); the rules of practices in Jaina ascetic life in the distant past were very severe and strict and there is no exemption in practicing the austere life; a Jaina society who are well versed in rules and practices of entertaining jain ascetics alone can serve the ascetic community; in other words jain ascetics will not be able to practice ascetic life in a hostile environment; this makes us to conclude that Srutha Kevali Acharya Bhadrabahu chose a right place in the south where Jainism was the popular religion of the land.

Dawn of Jainism in Tamil land

The question as to the origin of Jainism in Tamilnadu, Did Tamilnadu wait for Vishakacharya's arrival to get Jainism

introduced in the Tamil land? The answer is 'NO'; at the time of the arrival of Vishakacharya with a large group of ascetics and followers in Pandyan country (Tamilnadu) in about 3rd century BCE, Jainism was a popular religion followed by the royals, merchants and the masses ;

One of the reasons for arriving to this conclusion is that to support a large number of Jaina ascetics and followers the people of host country must be knowing all the do's and don'ts of principles of Jaina ascetic as well the householders life which are based purely on Ahimsa dharma, equality and social justice; Had an unreceptive and hostile conditions prevail at the time of arrival of Vishakacharya, he would not have ventured to put his foot on the hostile soil; the best example is 6th and 7th century Madurai and the Pandyan, Pallava countries; a hostile environment was designed and brutal atrocities were executed by the Vedic religious extremists who unleashed terror on Jain population and ascetics in Madurai and Pandyan country; the terrorized jaina house holders and ascetics of Madurai (and the Pandyan country) not getting proper support and security ,and could not withstand the hostile environment migrated out; this account has been recorded by the Vedic religious fanatics themselves in their literature; the conclusion is that Jainism was already a popular religion at the time of arrival of Vishakacharya and thousands of ascetics and followers of Vishakacharya were able to travel in Pandyan country strengthening the principles of Ahimsa in the minds of the people

References on Jainism in Tamil land in the ancient period

Valmiki Ramayana (8th century BCE)

An inscription of Sravanabelagola (7th cent. CE.) tells that Acharya Bhadrabahu instructed His disciple ascetic Acharya Visaka to continue his vihar to Tamil country and Visakacharya travelled to Pandya country; this had happened in about end of 3rd or beginning of 4th cent BCE. But Valmiki Ramayana (8th century BCE) has another story to tell; when Rama came down to South to spend his forest life he met many Jaina ascetics in Tamil country. This indicates that even before the arrival of Vishakacharya with a large number of ascetics (3rd /4th BCE) into Tamilnadu, Jainism was prevalent in Tamilnadu.

Reference in Kambaramayana

Exactly a message similar to what recorded in Valmiki Ramayana is reflected in **"Kamba Ramayanam"** a highly revered by the Vaishnavites and universally acclaimed Tamil literary work by Kavi chakrvarthi Kambar.

Kambar describes through the character Sugrivan about the high ascetic qualities of sky clad (Nirganth) Jaina ascetics performing meditation; at the time of departure of Hanumaan and Angathan to Srilanka in search of Seetha, Sugrivan advises them to bow and pay their reverence to great Jaina ascetics performing very tough austerities at the foot of Venkata mountain. This indicates that during the Ramayana period Jainism was prevalent in Tamil country;

This gives another very important information that Jainism was well established in the northern part of Tamilnadu as indicated in Kamba Ramayana - the mountain Venkatam was the Northern boundry of Tamil country as indicated in Tholkappium - a 2nd or 3rd century Grammar literature - the oldest, ancient Tamil work extant by a Jaina ascetic Tholkappiyar (generally it is held that after the setback to Jainism in Pandyan country due to the militant and conversion activities of Vedic, Animal sacrifice promoting, bhakthi movement during 6th& 7th centuries, Jains moved to the north and settled; but according to Kambar, during Ramayana period Jainism was flourishing in the northern part of Tamil Land)

The ancient Tamil country with Tamil Sangha (Tamil Academies)

From ancient times, Jain poets along with others participated in the literary activities of Tamil land; the assemblage or group of poets is called sangha. (academy) (Tamil : Sangam); in the ancient Tamil land there were three such Tamil academies. when examined closely the conception of an assembly of intellectuals and the name 'sangha' both owe their origin to the leaders of Jaina religious movements in Tamil country; in the ancient period Jaina intellectuals and ascetics formed themselves into well constituted ascetic group as Sangha, Gana and Gachcha; Mula sangha, Nandhi sangha, Dravida (Dramila) sangha etc.;

Researches on the ancient land of Tamil Land show that the present Tamilnadu had an extensive area called "Lemuria Continent" to the south of Kanyakumari, the southern tip of Indian landmass; this Lemuria Continent of Tamils ruled by Pandya kings with a capital city called "Kapatapuram" was supposed to have been submerged by sea; events related to the submergence of land mass are vividly described in "Silapathikaram" – a masterpiece Jaina Tamil epic by Ilankovadigal - a Jaina ascetic; because of two catastrophic oceanic events (Tsunami?) occurred one after the other a sizable land mass of the ancient Tamil land got separated and became what is now known Srilanka (Swarna Dwip) ; Pandyan kings created and fostered two Tamil Academies called first and second Tamil sangams; when the Lemuria

continent was swallowed by the sea Pandyan shifted his capital to the present Madurai; the period of existence of these Tamil academies was much earlier to that of arrival of Visakachariya into Tamilnadu; it should be noted that the Jaina ascetic "Tholkappiyar" (about 2nd/ beginning of 3rd century BCE), the author of the ancient Tamil grammer work, was one of the members of the two Academies ;

Jaina Tamil - Brahmi inscriptions dated from 2nd century BCE to 4th century CE

Epigraphical evidences assignable to the 2nd century BCE, at Mangulam, Arittapatti, Thiruvathavur, Kilavalavu, Anai malai etc. clearly indicate that Jainism already enjoyed the privilege of a popular faith in Tamil land even before the visit of Visakacharya (end of 2BCE or beginning of 3rd BCE). To date more than 80 Tamil - Brahmi inscriptions related to Jainism dated from 2nd century BCE to 4th century CE are found in 30 places in Tamil nadu; A detailed account of these Jainism related ancient writings on rocks will be given later;

Ancient Tamil classical writings (dated around 3rd or 4th BCE to 2nd CE)

Several ancient classic literary works furnish a good deal of information as to the ancientness of Jainism and prevalence of it in Tamil land even before the arrival of Vishakacharya from Karnataka.

To know about this period Sangam literature forms the basis; "Madurai Kanchi" - a sangam literature gives an elaborate description of Temple for Thirthankara; another sangam literature – "Pattinappalai" describes about a temple for Arugan in "Kaveripoompattinam" A sangam poet called "Nigandan kalaik kottu Thandanar" has written a poem in Natrinai - a sangam literary work - here the name "Nigandan" refers to a Jaina (Nirganthan = Nigandan - sky clad); another poet "Ulochanar" was a Jain as the name Ulochan indicates the practice of plucking of hair by Jaina ascetic - These evidences are comparatively of early date; one cannot discredit the solid evidence provided by literature, inscriptions;

The Hathikumbha inscription of the famous Jaina King Kharavela - a friend Pandyan King - (2nd century BCE)

The famous 2nd century BCE Inscription of King Kharavela recorded the participation of Pandya king in the celebrations conducted by Kharavela

on the occasion of recovery of Kalinga Jina (Thirthankara statue) from Magadha King; the inscription describing the events recorded the participation of Pandya King with horses, elephants, jewels and rubies as well as pearls in hundreds as presents to King Kharavela. Also we find a reference that Kharavela dismembered the confederacy of the T[r]amira (Dramira) (dramila - tamil) countries of one hundred and thirty years, which has been a source of danger to (his) Country (Janapada).

From this 2nd century BCE inscription of Jaina King Kharavela can infer that The Pandyan king was either an adherent of Jainism or a patron of Jainism. It should be noted that when the inscription talks about the confederation of Tamil kings mainly Chera, Chola and Pandya, it is Pandyan king only attended the celebrations conducted by Kharavela - a Jaina king. Thus at the time of the visit of Vishakacharya to Pandyan kingdom Jainism was already in existence and popular in Tamil nadu with the support of masses and the King.

Inscriptions from Andhra (4th century BCE)

The discovery of inscription of Mahamehavahana King Sa at Guntappalli indicates that Jainism was prevalent in Andhra in 6th century BCE; there is a view that Jainism in Andhra made a foot hold in northern part of Tamil land;

Mahavamsa account of Jainism in Srilanka (4th century BCE) - diffusion from Tamil land

Mahavamsa, a Srilanka chronicle undisputedly recorded the presence of Jainism in Srilanka in 4th BCE; according to Mahavamsa, Srilankan King "Pandukabaya" (BCE-377-307) when he established a new capital at Anuradhapura temples and places for ascetic life for Jaina ascetics were constructed; to quote English translation of Mahavamsa as far as Gamani - tank, a hermitage was made for many ascetics; eastward of that the ruler Pandukabaya built a house for the Nigantha Jotiya; in that same region dwelt the nigantha named Giri and ascetics of various heretical sects; and there the lord of the land built a chapel for the Nigantha Kumbhanda; it was named after him; there lived fi. hundred families of heretical beliefs; on the further side of Jotiya's house and on this side of Gamini –tank he likewise built a monastery for wandering mendicant monks--- (Nigantha – Nirgrantha - sky -clad ascetics - Digamber Jaina ascetics) - (English rendering of Mahavmas by Geiger). From this one can infer that Jainism was prevalent in about 4th BCE in Srilanka with the support of the King Pandukabaya;

The pertinent question is how did Jainism found foot hold in Srilanka?

What was the route through which it travelled?

Jaina ascetics should not cross or travel over sea; such is the rules and practices ordained for a digamber Jaina ascetic; hence they could not have travelled through the sea from North India or Kalinga country where Jainism was a popular religion at that time; the only passage available to Srilanka

for jaina ascetic was land route - the present Srilanka was once a part and parcel of ancient Tamil country; after the catastrophic oceanic disturbances it was separated with a narrow and shallow sea lane or a strip of land ; Jaina ascetics and most probably Jain merchants might have used this land connectivity; it should be noted that the epic Ramayana vividly describes the construction of a bridge between the Tamil land and northern part of Srilanka, called Ramar bridge;

This very amply proves that even before the arrival of Vishakacharya Jainism was prevalent in Tamil country and from there it spread into Srilanka;

Reference in Mahapurana of Acharya Jinasena and Acharya Gunabadra about the rule of Jaina Vidhyadara King Ravana in Srilanka

The highly revered Jaina Mahapurana describes the life of Thirthankaras, 12 Chakravartins, 9 Baladevas, 9 Vasudevas and 9 prathi Vasudevas; In that part of Mahapurana describing the life story of Munisuvratha Thirthankara (20th Thirthankara) a detailed account of Ravana - the prathi Vasudeva - the Jjain vidhyadara king of Srilanka is given; Ravana's birth, establishment of kingdom in Thrisigari in the ocean island of Srilanka by his ancestors etc are given; it is interesting to note that there a famous mountain by name "Thirikuta giri' (Thrisigari of Mahapurana) with a foot print at it's crest is present in SriLanka. Nowadays it is claimed by Buddhists, Hindus, Christians and Muslims as their sacred place!!! Worshipping the foot prints of the emancipated souls is the practice of Jains from time immemorial!

Thus there is no element of improbability, there is no room for doubt about the fact that Jainism – the religion of Ahimsa has been the home religion of Tamils from the distant past. Thus there is no question of introduction of Jainism into Tamil land; It has been a native religion of Tamil land from the time of Lord Rishabha whose 'Dhivyadwani' (divine preaching) was heard in 18 major languages, one among them was Tamil.

(to be continued)

दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा
प्रथम बार महिला गृह उद्योग की स्थापना

दिगम्बर जैन महासमिति के इतिहास में प्रथम बार पुण्य निधि (शिक्षा-स्वास्थ्य-रोजगार) के अन्तर्गत तीर्थ क्षेत्र करगुवा जी झांसी में महिला पापड़ उद्योग केन्द्र की स्थापना की गई। समस्त मशीने ऑटोमेटिक हैं तथा पापड़ जैन विधि (छना हुआ पानी-दाल धोकर-मशालें सुखाकर और केन्द्र में ही सुखाकर लगाये जायेंगे) इसका नाम महापापड़ रखा गया है।

म्बर जैन महासमिति के द्वारा स्वरोजगार योजना के अन्तर्गत सिलाई एवं कढाई केन्द्र जोगीपेठ, तेलंगाना में भी खोला गया तथा सभी क्षेत्रों से इस प्रकार केन्द्र एवं मशीने उपलब्ध कराने हेतु मांग आ रही है। जैसे महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र के लातूर-अकोला-नांदुरा-नांदेड, कर्नाटक के बलारशाह, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल आदि क्षेत्रों से। महासमिति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

महासमिति द्वारा अगस्त माह में उत्तर प्रदेश-दिल्ली-मध्य प्रदेश में शिक्षा में सहयोग राशि उपलब्ध कराई गई है। महाराष्ट्र के मराठवाड़ा क्षेत्र नांदुरा एवं अकोला में एक पापड़ बनाने की मशीन देकर दिगम्बर जैन महिला पापड़ उद्योग की स्थापना की जाएगी।

आओ हम सब मिलकर जैन समाज के ऐसे परिवारों की सहायता के लिए आगे आयें जो हमारी ओर इस आशा से देख रहे हैं कि समाज के दयावान-दानवीर-धार्मिक व सामर्थ्यवान महानुभावों के सहयोग से हमें रोजगार उपलब्ध कराकर हमारे परिवार के जीवन यापन में तथा बच्चों को शिक्षा में सहयोग करेंगे। यह आपकी दया एवं धन तथा हमारी मेहनत से ही सम्भव है।

अत: दिगम्बर जैन महासमिति आप सभी से अनुरोध करती है कि महासमिति की इस योजना में दान (सहयोग) राशि देकर पुण्य लाभ अर्जित करने का कष्ट करें।

इस योजना में अपनी सहयोग राशि का चैक/ड्राफ्ट दिगम्बर जैन महासमिति के नाम देय भेजने की कृपा करें। इस योजना का अलग बैंक अकाउण्ट है निम्न प्रकार है जिसमें आप सीधे तोर पर राशि जमा कराकर उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देने की महती कृपा करें जिससे आपकी रसीद भेजी जा सके और आपका नाम महासमिति पत्रिका में प्रकाशित कराया जा सके:-

Bank Of India, Branch Janpath, New Delhi
Digamber Jain Mahasamiti
A/C No. 600010100040954
IFC Code BKID0006000

-: निवेदक:-

अशोक जैन बड़जात्या
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बिपिन कुमार जैन सर्राफ
राष्ट्रीय महामंत्री

उदगिर में भूगर्भ से 2000 वर्ष प्राचीन भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्राप्त हुयी

श्री 1008 आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, उदगीर

20 वीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागरजी महाराज के परम शिष्य आचार्य श्री 108 सुमतीसागर महाराज की जन्मभूमि उदगीर, जिला लातूर (महा.) है। यहाँ पर 900 साल प्राचीन मंदिर हेमाडपंथी शैली गुफाओं जैसा प्रतीत होने वाला अखण्ड शिला पाषाण की छत एवं मंदिर के शिलास्तंभ एक अनोखा प्राचीन जैन वैभव परंपरा प्राचीन जैन मूर्तियों का संग्रह जो मूर्तियां लगभग 500 साल पुरानी, उससे भी पुरानी मूर्तीयों का यहां पर होना, उसमें सुपार्श्वनाथ भगवान की उलटे स्वस्तिक की मूर्ती ऐसे अतिशय युक्त मूर्तियों से भरा मंदिर जैन धर्म की प्राचीनता की वैभव गाथा को लेकर आज भी उस प्राचीन धरोहर को लिये हुये हमें प्राचीन संस्कृति के दर्शन से अवगत कराता है।

उदगीर में हुआ चमत्कार

11 जनवरी 2016 को मंदिर के निकटतम परिसर में उर्दू स्कूल के निर्माण कार्य के लिये खुदाई का काम चल रहा था। जे.सी.बी. मशीन द्वारा मिट्टी का ढिगारा निकाला जा रहा था, यह मिट्टी पुनश्च जे.सी.बी यंत्र द्वारा ट्रेक्टर में भरी जा रही थी तब एक बार अचानक जे.सी.बी. यंत्र में आये हुये पाषाण की ओर आकर्षित हुआ। उन्हें उस पाषाण में मूर्ती दिखाई दी। जब वे मूर्ती बाहर निकालने लगे तो उन्हें बिजली का करंट लगने के बाद कैसी झनझन होती वैसी ही झनझन उन्हें हुई। कामगार बौद्ध धर्मी था उसने माना यह मूर्ती बौद्ध धर्मीय है ऐसा मान उसने 3 दिन मूर्ति अपने ही घर में रखी। तब तक उसे बेचैनी ही रही तब उसने समाज के वरिष्ठ अधिकारी श्री संजय बोडखे इन्हें अपने घर बुलाकर मूर्ति दिखाई। श्री संजय बोडखे श्री राजकुमार जैन (मानवतकर) के मित्र हैं श्री राजकुमार जैन को जैन प्रतिमाओं की थोडी बहोत जानकारी थी इसीलिए उन्होंने अपने मित्र राजकुमार जैन (मानवतकर) को यह मूर्ति दिखाई।

श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान की वालुकामय प्रतिमा का प्रगट होना:-

जे.सी.बी. यंत्र में मिला पाषाण भगवान पार्श्वनाथ की 3.5 फिट सप्त पाषाण युक्त पार्श्वनाथ चमत्कारिक भगवान की प्रतिमा जिसे श्री राजकुमार जैन ने यह जैन धर्म के भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है आप इसे हमें दे दो, हम इसे जैन मंदिर में विराजमान करेंगे। सकल जैन समाज के अनुयायी तक यह सूचना प्रसारित हुयी। श्री राजकुमार जैन समेत सकल दिगंबर जैन समाज के समस्त नागरिक उस प्रतिमा को देखने और मंदिर लाने के लिये घटना स्थल पर गये। श्री संजय बोडके और उस कामगार ने यह जैन प्रतिमा जैन समाज के नागरिकों को सुपुर्द कर दी।

पार्श्वनाथ भगवान का अतिशय : यह बालुकामय चतुर्थ कालीन भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। जे.सी.बी. मशीन में यह प्रतिमा अलग आ गयी मिट्टी से ढंकी होने के कारण पता नहीं चला की यहां प्रतिमा है। 50 ट्रेक्टर मिट्टी

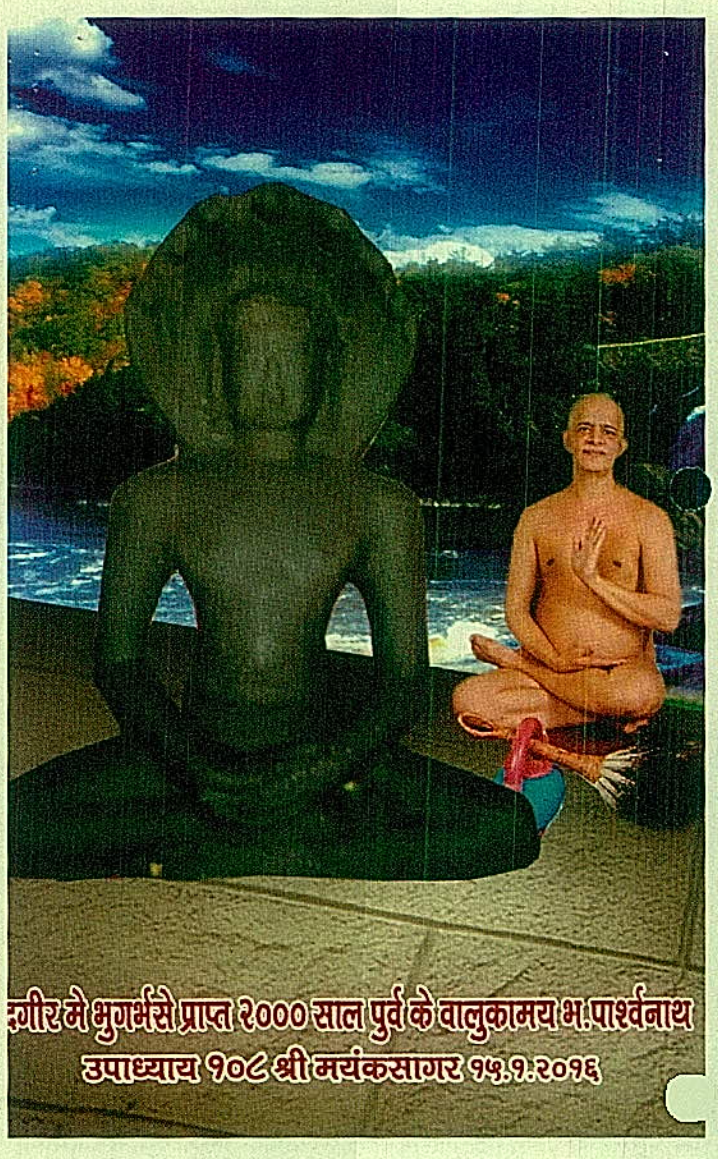

खोदकर ढिगारे में भी यह प्रतिमा अखण्ड रही। फिर से ट्रॅक्टर में मिट्टी भरकर दूसरी ओर ले जा हरे थे तब प्रतिमा उस जे.सी.बी. यंत्र में अलग आकर बैठ गयी। प्रतिमा को तनिक भी क्षति नहीं पहुँची। जिस कामगार के हाथ वो प्रतिमा लगी वे उसे रखना चाहता था। जब भी नॉनव्हेज खाने वाले लोग उसे स्पर्श करते हैं तो प्रतिमा में से करंट लगा जैसा उन लोगों को प्रतीत होता था। गाँववाले जैन समाज के लोगों ने प्रयास कर उस प्रतिमा को रात में 15 जनवरी 2016 को अदिनाथ दिगंबर नये जैन मंदिर में लाये। मंदिर का बांधकाम चल रहा था मंदिर पूर्णता की ओर था लेकिन मंदिर का एक कमान ही बनना शेष रहा था उसके लिये बहोत रुकावटें आई जैसे ही मूर्ती मंदिर में प्रवेश करती है कमान भी बनकर तैयार हो जाता है।

20 वीं सदी के आचार्य सुमतिसागरजी महाराज जी की जन्मस्थली उन्होंने 65 साल पहले राजस्थान से एक भारी 4x4 का पत्थर चारित्र चक्रवर्ती

शांति सागरजी महाराज की चरण पादुका विराजमान करने के लिये भिजवाया था वह पत्थर 65 साल तक उसी स्थान में इधर से उधर घूमता रहा मूर्ति जब मंदिर में लायी गयी तभी सभी गांव के जैन समाज की निगाहें उस पत्थर की ओर गयी। पत्थर रेत मिट्टी से ढका साधारण सा पत्थर था उसकी सफाई की गयी तो वो पत्थर ग्रेनाईट का निकला यह भी एक अतिशय है। मानो वो पत्थर इस मूर्ति की प्रतिक्षा में ही इतने साल तक इधर-उधर घूमता रहा। मानो आचार्य सुमतीसागरजी को भी कुछ संकेत मिला होगा, बरसों बाद इस धर्मनगरी में चमत्कार होगा और इस पत्थर पर मूर्ति विराजमान होगी। विधिवत उस पत्थर पर पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति विराजमान की गयी।

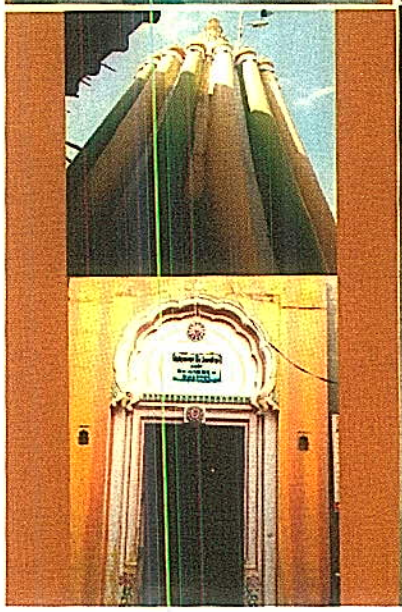

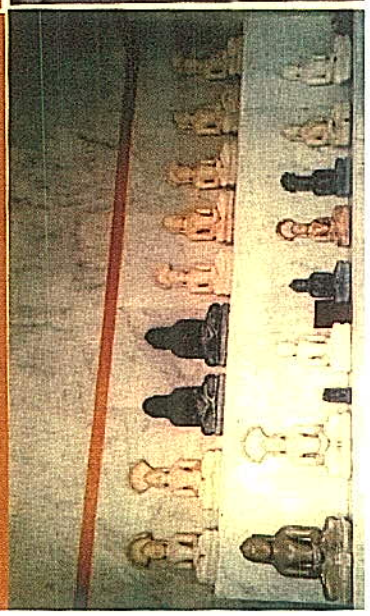

उपाध्याय 108 श्री मयंकसागरजी के कदम चल पडे उदगीर की ओर:

भगवान पार्श्वनाथ की बालुकामय मूर्ति जब उदगीर में मिली तब मयंक सागरजी महाराज उदगीर से 16 किलो मीटर दुरी पर वाढवना गाँव में पंचकल्याणक के लिये आये थे। वे वहां 15 दिन थे उदगीर के ग्रामस्थों ने मयंकसागरजी महाराज को मूर्ति मिलने का वृत्तांत बताया और बिनती की आप चलो उदगीर को उपाध्याय 108 श्री मयंकसागरजी ससंघ उदगीर को आये केवल आठ घंटे वास्तव उदगीर में रहा। उन्होंने मूर्तिको देखा दर्शन किये और भक्तो को कहा या वालुकामय भगवान पार्श्वनार्थ की चतुर्थ कालीन 2000 साल पुरानी मूर्ति है। अतिशय युक्त चमत्कारिक मूर्ति होने से अनेक अतिशय युक्त घटनाओं से समाज परिचित होगा और सभी के लिए शुभ मंगल प्रदाता यह मूर्ति है। जो भी उदगीर आकर इस मंदिर में विराजित सभी प्राचीन प्रतिमाओं का एवं इस प्रतिमा का दर्शन करेगा मानों उसे लगेगा कि मेरा जीवन सफल हो गया। मैं धन्य हो गया। बाद में उपाध्याय श्री 108 मयंक सागरजी ने यहां से औरंगाबाद की ओर विहार किया। औरंगाबाद में उदगीर वाले भक्त चातुर्मास का श्रीफल चढाने मयंक सागरजी के पास गये और उनसे अनुरोध किया कि, 2016 का चातुर्मास आप उदगीर में करो। केवल 8 घंटे उदगीर में रहे मयंक सागरजी के कदम उदगीर की ओर चल पड़े। उन्हे भी पता नहीं हम क्यों जा रहे उदगीर 500 कीलोमीटर पैदल पैर में छाले फिर भी मुनिश्री उदगीर पधारे।

उदगीर वासियों का भाग्य का पिटारा ऐसा खुला ऐसा भव्य, दिव्य अलौकिक मयंक सागरजी गुरुदेव 2016 का चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम 3-4 हजार लोगों की भीड़ में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के दौरान जब पार्श्वनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक हो रहा था तब मुनिश्री की कलश स्थापना कार्यक्रम भी हो रहा था तब भारी वर्षा लगातार दो घंटो तक हुयी। डेढ़ महिनों से नलों को पानी नहीं था, बोर कुएँ का पानी सूख गया इस बारिश से उद्गीर वासियों को मानो जल संजीवनी मिली हो। कड़ी मेहनत एवं उत्साह से उदगीर वासियों ने बहोत ही सुंदर कलश स्थापना का कार्यक्रम संपन्न कराया। गुरुभक्त सौ. भावना मनोज काला, नांदेड दोनों 18 जुलाई को मयंक सागरजी के दर्शन के लिये उदगीर गये थे गुरु दर्शन मंदिर के पार्श्वनाथ भगवान के दर्शन कर वे नांदेड की ओर निकले। मयंक सागरजी महाराज पार्श्वनाथ भगवान के निकट बैठे थे उन्होंने एक श्रावक को बुलाया और कहा आप मनोज भाई को फोन लगाकर वापस बुलवालो मनोजभाई 10 किलो मीटर आगे चले गये थे गुरु आज्ञा मान वे लौट आये। समय था संध्या 7 बजे का तब उदगीर लातूर रोड पर एक भीषण अपघात हुआ था। एक कंटेनर और जीप के टकराने से घटनास्थल पर ही 9 लोगों की मृत्यु हो गयी। गुरुभक्ति का फल एवं उदगीरवाले पारसबाबा का चमत्कार सौ. भावना मनोज काला के साथ कोई अघटित घटना नहीं हुयी। यह भी एक चमत्कार ही है।

यह सभी उपरोक्त वृत्तान्त हमने आँखो देखा, कानों से सुना मयंक सागरजी से सुना, ग्रामस्थों से प्रत्यक्ष मुलाकात कर के यह सब लिखा है। सभी भारतवासी सकल दिगंबर जैन समाज के नागरिक एक बार उदगीर अवश्य आयें। अनेक चमत्कारों से भरा यह 20 वीं सदी के आचार्य सुमतिसागर जी की जन्मभूमि एवं 900 वर्ष पुराना पाषाण का मंदिर और मंयक सागरजी का 2016 का चातुर्मास यह दुग्धशर्करा योग दर्शन कर अपना जीवन धन्य करें।

प्रस्तुति-डॉ. सो. अरुणा रविंद्र काला

महामस्तकाभिषेक कार्यालय का शुभारम्भ

स्वराज जैन, नयी दिल्ली

नयी दिल्ली: श्रवणवेलगोला (कर्नाटक) में भगवान बाहुबली के सन् 2018 में होने वाले महामस्तकाभिषेक के लिए कार्यालय का उद्घाटन-ए-ब्लॉक, बसन्त विहार, नयी दिल्ली में किया गया। इस उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने की। गोयल जी ने इस अवसर में काह कि भगवान बाहुबली के सन्देशों को यहाँ से पूरे भारतवर्ष में फैलाया जाएगा। जो पूरे देश के लिए शान्ति और समरसता की शिक्षा प्रदान करनेवाला होगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी एवं श्रवणबेलगोला महामस्तकाभिषेक कमेटी की अध्यक्ष श्रीमती सरिता जैन (चेन्नई) ने कहा कि फरवरी, 2018 में श्रवणबेलगोल स्थित भगवान बाहुबली जी का महामस्तकाभिषेक होना है, यह आयोजन जैनधर्मालम्बियों के लिए सबसे बड़ा आयोजन है। जिसका उद्देश्य सर्वकल्याणार्थ होता है। भगवान की भक्ति व जैनधर्म की प्रभावना हेतु समर्पित है। 12 वर्ष बाद होनेवाले महामस्तकाभिषेक में भारतवर्ष के अलावा विदेशों से भी श्रद्धालु आने के लिए उत्सुक हैं। हमें इस कार्य के लिए भारत सरकार, कर्नाटक सरकार एवं दिल्ली सरकार से पूर्ण सहयोग की आशा है। इस मेले को सभी लोग के सहयोग से एक यादगार महोत्सव बनाने के लिए हम प्रयत्नशील है। इस अवसर पर साहू अखिलेश जैन (भारतीय ज्ञानपीठ के प्रबधन्यासी एवं दिगम्बर जैन परिषद् के कार्यकारी अध्यक्ष) ने कहा कि उत्तरभारत की समस्त जैन समाज एवं परिषद् की ओर से इस महोत्सव को सफल बनाने के लिए यथा सम्भव सहयोग करेगी।

इस महोत्सव के महामन्त्री सतीश जैन (एस.सी.जे.) ने सभी लोगों का आभार प्रकट किया।

इस अवसर पर श्रीमती सरिता जैन (चेन्नई), श्री सतीश जैन (एस.सी.जे.), साहू अखिलेश जैन, श्री प्रमोद जैन (वर्धमान ग्रुप), श्री अनिल जैन, प्रकाश वोहरा, श्री अनिल जैन (कनाडा), श्री मानक चन्द जैन, डॉ. नलिन शास्त्री, स्वराज जैन (टाइम्स ऑफ इंडिया), श्री पंकज जैन, श्री राकेश गौतम मोटर्स, डॉ. जयकुमार उपाध्ये, श्री कमलकान्त जैन, श्रीमती प्रवीणा जैन, श्रीमती सुनीता काला, शशि काला, मनोरमा पटोदी, बीना पटोदी, संजू जैन, सरोज सेठ, जैन, संगीता अजमेरा, दीपाली जैन, निगम जैन आदि मौजूद थे।

मौत आने पर पता चलता है, जीवन कैसा गुजरा

– आर्यिका पूर्णमति माताजी

गुना। दिन आता है जब पता चलता है रात कैसे गुजरी, जब मौत आती है तब पता चलता है, जीवन कैसे गुजरा। पैसे की याद हमेशा बनी रहती है। ज्ञानी हमेशा परणति पर ध्यान देता है, अज्ञानी रूपये–पैसों पर, ध्यान रहे जिस मोह को अपना मान रहे हो, वह मोह ही मेरा नहीं है तो मोह की हुई वस्तु मेरी कैसे हो सकती है। सम्यग्दृष्टि जीव की परिणति पर द्रव्य को अपनाने की नहीं होती है। तू स्वयं प्रभु है, प्रभु बनने की शक्ति तुझमें है, लेकिन परवस्तु को पाने के लिए निरंतर विचार करता रहता है और अन्तर वस्तु पाने का कोई विचार नहीं करता है तो अपना आत्म स्वरूप कैसे प्राप्त होगा। जैसी विचारधारा बनाओगें वैसा अगला जन्म होता चला जाएगा। अपने आत्म स्वभाव का चिंतन करों, यही चिंतामणि बन जाएगा। उक्त विचार आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की परमशिष्या कोकिलकण्ठी आर्यिका रत्न पूर्णमति माताजी ने गुना चातुर्मास के अन्तर्गत संचालित समयसार कक्षा में 25 अगस्त को व्यक्त किये। आध्यात्मिक चिंतन से ओत–प्रोत प्रवचनमाला में माताजी ने कहा कि भिखारी भी भोजन करता है भोगी भी और योगी भी, लेकिन तीनों में यदि कोई अन्तर है तो वह मान्यताओं का अन्तर है। इन्हीं मान्यताओं व उद्देश्य के अनुरूप ही कर्मबंध होता है।

मालकियत बढ़ रही है, मालिक का पता नहीं

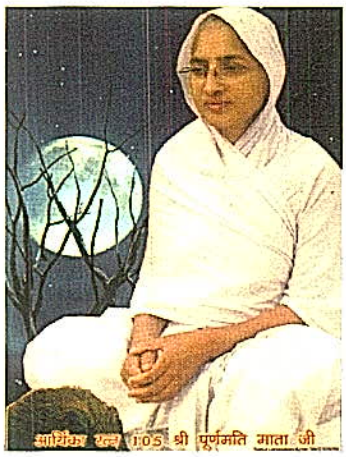

माताजी ने कहा कि हमें सिद्ध बना दे ऐसा कोई कल्पवृक्ष नहीं है, हमारे भीतर हमारी कल्पना ही हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। विवेकपूर्ण कल्पना हमें सिद्धशिला तक पहुँचा सकती है। हमें अपनी मान्यता का घड़ा सीधा करना पड़ेगा। विश्वास व श्रद्धान सही करना होगा। सुख–दुख बाहर से नहीं स्वयं की मान्यता से आते है। आज लोक मालकियत बढ़ाते जा रहे है लेकिन मालिक का कोई पता नहीं है। यह विचार करना आवश्यक है। आज मनुष्य रूप के विषय में निरंतर लगा हुआ है, लेकिन स्वरूप के लिए चिंतित नहीं है हम जिस दिन रूप की चिंता छोड़ देंगे उस दिन समयसार पढ़ना सार्थक होगा।

–राजेन्द्र जैन 'महावीर'

शिक्षक दिवस के अवसर पर रविन्द्र भवन भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर लोक शिक्षण संचालनालय के अपर संचालक ए.के.दीक्षित ने श्री राजेन्द्र जैन महावीर प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर म.प्र. से सम्मानित शिक्षक व स्कूली शिक्षा मंत्री कुंवर विजय शाह, राज्य मंत्री दीपक जोशी, प्रमुख सचिव एस. आर. मोहंती, दीप्ती गौड मुखर्जी, आयुक्त नीरज दुबे, संयुक्त संचालक धीरेन्द्र चतुर्वेदी, राकेश तिवारी, अरुण विजयवर्गीय, डॉ. वंदना मिश्र आदि उपस्थित थे।

श्री जीवनप्रकाश जी को पीएच.डी. पर हार्दिक बधाई

अखिल भारतवर्षीय दि. जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जीवनप्रकाश जैन को 9 अगस्त 2016 के दिवस म.प्र. भोज विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) से पीएच.डी. पूर्ण करने पर हार्दिक शुभकामना एवं बधाई।

आपने देश-विदेश के जाने-माने गणितज्ञ डॉ. अनुपम जैन-इन्दौर के मार्गदर्शन में एनालिसिस ऑफ सम मैथेमेटिकल कन्टेन्टस इन फिलोसॉफिकल टेक्स्ट ऑफ इंडिया विषय पर अपना शोध प्रबंध तैयार करके यह डिग्री प्राप्त की है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ एवं गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ-इंदौर नामक रिसर्च सेंटर्स के माध्यम से आपने शोध कार्य पूर्ण किया। पश्चात 8 अगस्त 2016 को विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय श्री तारिक जफर, डायरेक्टर प्रो. एन.सी. जैन एक्सटर्नल ऑब्जर्वर प्रो. एन. शिवकुमार-बैंग्लोर तथा गार्डन डॉ. अनुपम जैन आदि उपस्थित शिक्षाविदों ने आपको बधाई देकर पीएच.डी. की पूर्णता घोषित की।

प्रस्तुति- डॉ. सुरेखा मिश्रा
(कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इंदौर)

स्वरुपचन्दजी जैन 'मारसन्स' आगरा का आकस्मिक निधन

हमारे परम आदरणीय श्रीयुत स्वरुपचन्दजी जैन 'मारसन्स', आगरा के आकस्मिक निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धेय बाबूजी की कर्मठ कार्यकर्ता व कुशल नैतृत्व करने के रूप में एक अलग पहचान थी। नैतिक शिक्षा, धर्म व संस्कृति के सृजन, साधु-संतों की वैय्यावृत्ति तथा अतिशय व सिद्धक्षेत्रों के संरक्षण-संवर्धन में आपका अतुलनीय योगदान हमारे लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

हम सभी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि शोक संतप्त-परिवार को इस अपार दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

-:श्रद्धावनत्:-

वात्सल्य रत्नाकर आचार्य विमलसागर जन कल्याण ट्रस्ट

रजि आफिस: 233, हल्दियों का रास्ता. जॉहरी बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान)

ब्रांच आफिस: विमलधाम (वात्सल्य रत्नाकर, आचार्य 108 श्री विमल सागर महाराज जी की जन्म भूमि ग्राम कोसमा, लहसील-जलेसर, जिला-एटा (उ.प्र.)

जैन समाज के नेता श्रद्धेय श्री स्वरुपचंद जैन 'मारसन्स' के दि. 30/8/2016 को हुये असमायिक निधन से पूरे जैन समाज में शोक की लहर दौड़ गयी। वह 89 वर्ष के थे। श्रद्धेय बाबूजी एक उत्कृष्ट उद्योगपति ही नहीं अपितु सर्वोदयि विचारक और साधक भी थे। राष्ट्रीय सेवा की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी थी। वह पक्के गांधीवादी थे और खादी उनका मनपसंद लिबास था। वे इस कमेटी के सम्माननीय सदस्य तथा श्री शौरीपुर बटेश्वर क्षेत्र के अध्यक्ष थे। अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े थे। श्री सम्मेदशिखर जी के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। श्रद्धेय बाबूजी आज हमारे बीच नहीं रहे परंतु उनके जीवनमूल्यों, आदर्शों की महक तथा सात्विक प्रवृत्तियों का प्रकाश चतुर्दिक विस्तीर्ण होता रहेगा और करता रहेगा। अनुप्राणीत पूरी जैन समाज को उनकी जीवंत अख्याओं द्वारा

श्री बाबूलालजी पहाड़े (राजधानी होटल वाले), हैदराबाद का दु:खद निधन

हमें यह सूचित करते हुए दु:ख हो रहा है कि श्री बाबूलालजी पहाड़े जो राजधानी होटल वाले के नाम से विख्यात थे उनका निधन दि. 12-8-2016 को हो गया वे 78 वर्ष के थे।

श्री बाबूलालजी पहाड़े का जन्म कर्नाटक प्रान्त के बीदर जिले के घनोरा ग्राम में स्व. श्री संतुलालजी पहाड़े के यहाँ हुआ था। आपके बड़े भाई दानवीर स्व.श्री मांगीलालजी पहाड़े थे, दोनों भाइयों की जोड़ीने स्वास्थ्य सेवा, धर्म संस्कृति के सृजन में उल्लेखनीय योगदान देकर उन्हें पल्लवित एवं पुष्पवित किया है। परम पूज्य राष्ट्र संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा व पं. श्री रतनलालजी बेनाड़ा के मार्गदर्शन में हैद्राबाद शहर के मध्य में सन् 2004 में पहाड़े परिवार द्वारा निर्मित भवन में पारसनाथ दिग. जैन गुरुकुल की स्थापना की गई है जो निरंतर संचलित है और जिसमें करीब 2000 विद्यार्थीयों ने अपनी शिक्षा पूर्ण कर अलग-अलग क्षेत्रों में उच्च पदों पर नियुक्त होकर जीवको पार्जन कर रहे हैं। श्री बाबूलालजी इस कमेटी के सम्माननीय सदस्य थे। उनके देहावसान से जैन समाज की अपूर्णनीय क्षति हुई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं को चिरशांति एवं शोकसंतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिले ऐसी वीर प्रभू से प्रार्थना करता है।

Phone :23878293 Fax:022-23859370 || तीर्थक्षेत्र संस्कृति के प्राण हैं || E-mail : tirthvandana4@yahoo.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTH-KSHETRA COMMITTEE

कार्यालय : हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - ४०० ००४

प्रतिनिधि फोटो

आजीवन सदस्यता फार्म

(संयुक्त परिवार, फर्म,पेढ़ी, कंपनी, चेरिटेबल ट्रस्ट, सोसायटी या कॉर्पोरेट बाडी के लिए)

दिनांक २०

श्रीमान् महामंत्री जी,

हम भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं। हम इस संस्था के उद्देश्यों एवं नियमों, उपनियमों से सहमत हैं। हम अपनी पूर्ण सामर्थ्य से संस्था के कार्यों में अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। संस्था के नियमानुसार निर्धारित सदस्यता शुल्क की राशि रु.११,०००/-(रुपये ग्यारह हजार) भिजवा दी है/भिजवा रहे हैं। कृपया हमारी यह राशि संस्था के ध्रुवफंड (Corpus Fund) में जमा करें तथा आजीवन सदस्यता स्वीकार कर सूचित करने की कृपा करें।

संस्था का नाम : .....

पूर्ण पता : .....

.....

.....पिन कोड : ..... फोन : .....

.....मो.नं.:.....ई.मेल: एस.टी.डी. .....

प्रतिनिधि का नाम : .....

प्रतिनिधि का व्यक्तिगत विवरण फॉर्म संलग्न है ।

(आवेदक के हस्ताक्षर तथा सील)

नोट : (1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कंपनी, चेरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी या कारपोरेट बाडी पदाधिकारी परिषद की स्वीकृति से सदस्य बन सकेगी। परन्तु उनको सदस्य बनने पर अपनी ओर से प्रतिनिधि के रूप में किसी एक दिगम्बर जैन व्यक्ति का ही नाम भेजना होगा। यह प्रतिनिधि सदस्य कभी भी बदला जा सकेगा । *इस प्रकार की सदस्यता 25 वर्ष की अवधि तक के लिए ही रहेगी ।*

(2) जो दातार 80जी. का लाभ लेना चाहता है तो उपरोक्त निर्धारित राशि में से 7,500/- रु. 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट' के नाम से चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट बनाकर भेजें या बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड मुंबई ब्रांच के सेविंग खाता क्र. 13100100008771 में जमा कराकर हमें सूचित करें। शेष 3,500/- रु. का चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' के नाम से बनाकर भेजें अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक मुंबई ब्रांच के संविंग खाता क्र. 001210100017881 में जमा कराकर हमें सूचित करें।

for office use only

उपरोक्त आवेदन पत्र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की दिनांक .....की सभा में प्रस्तुत किया गया और सदस्यता स्वीकार/अस्वीकार की गई ।

सदस्यता क्रमांक :

दिनांक : महामंत्री

Phone :23878293 Fax:022-23859370 ।। तीर्थक्षेत्र संस्कृति के प्राण हैं ।। E-mail : tirthvandana4@yahoo.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTH-KSHETRA COMMITTEE

कार्यालय : हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - ४०० ००४

फोटो

आजीवन सदस्यता फार्म

दिनांक २०

श्रीमान् महामंत्री जी,

मैं दिगम्बर जैन हूँ और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का आजीवन सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस संस्था के उद्देश्यों एवं नियमों, उपनियमों से सहमत हूँ। मैं अपनी पूर्ण सामर्थ्य से संस्था के कार्यों में अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहूँगा/रहूँगी। संस्था के नियमानुसार निर्धारित सदस्यता शुल्क की राशि रु.११,०००/-(रुपये ग्यारह हजार) भिजवा दी है/भिजवा रहा/रही हूँ। कृपया मेरी यह राशि संस्था के ध्रुवफंड (Corpus Fund) में जमा करें तथा आजीवन सदस्यता स्वीकार कर सूचित करने की कृपा करें।

नाम ..... आयु .....

पिता/पति का नाम .....

पता निवास	कार्यालय .....
.....	.....
.....	.....
पिन कोड :	पिन कोड : .....
टेलीफोन/मोबाइल नं.:	टेलीफोन/मोबाइल नं.: .....
ई मेल :	ई मेल : .....

व्यक्तिगत विवरण फॉर्म संलग्न है ।

(आवेदक के हस्ताक्षर)

नोट : (1) 21 वर्ष से अधिक आयु वाला कोई भी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी स्त्री/पुरुष पदाधिकारी परिषद की स्वीकृति से सदस्य बन सकेगा।

(2) जो दातार 80जी. का लाभ लेना चाहता है तो उपरोक्त निर्धारित राशि में से 7,500/- रु. 'भारतवर्षीय दिग म्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट' के नाम से चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट बनाकर भेजें या बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड मुंबई ब्रांच के सेविंग खाता क्रं. 13100100008771 में जमा कराकर हमें सूचित करें। शेष 3,500/- रु. का चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' के नाम से बनाकर भेजें अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक मुंबई ब्रांच के संविंग खाता क्रं. 001210100017881 में जमा कराकर हमें सूचित करें।

for office use only

उपरोक्त आवेदन पत्र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की दिनांक .....की सभा में प्रस्तुत किया गया और सदस्यता स्वीकार/अस्वीकार की गई ।

सदस्यता क्रमांक :

दिनांक : महामंत्री

महाराष्ट्र अंचल द्वारा एलोरा क्षेत्र का अवलोकन

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा दिनांक 23 अगस्त 2016 को श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र पहाड मंदीर एलोरा का अवलोकन किया गया। पहाड मंदीर का काम प्रगती पथपर होने से क्षेत्र पर भारत भर के श्रावक-श्राविकाओं का अवागमन रहता है। पूरातन मूर्ती होने के कारण आकर्षण ज्यादा रहता है। पहाडपर जानेवाले सीढीयों की मरम्मत करने के कारण एवं सीढीयों के आजू बाजू रेलींग लगाने कि कारण यह भाग शोभनीय दिखाई दे रहा था। पहाड के नीचे भी त्यागी भवन तथा अतिथी निवास का काम भी प्रगती पर है। श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकूल एलोरा के गूणवंत विद्यार्थीयों का इस समय सम्मान किया। अवलोकन के समय महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार पलीवाल, महामंत्री श्री देवेंद्रकुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री मनोजकुमार साहूजी, सहकोषाध्यक्ष श्री भरतकुमार ठोले, एलोरा क्षेत्र के महामंत्री डॉ. प्रेमचंद पाटणी, दिपक ठोले आदि महानुभाव उपस्थित थे।

देवेन्द्रकुमार काला
महामंत्री-महाराष्ट्र अंचल

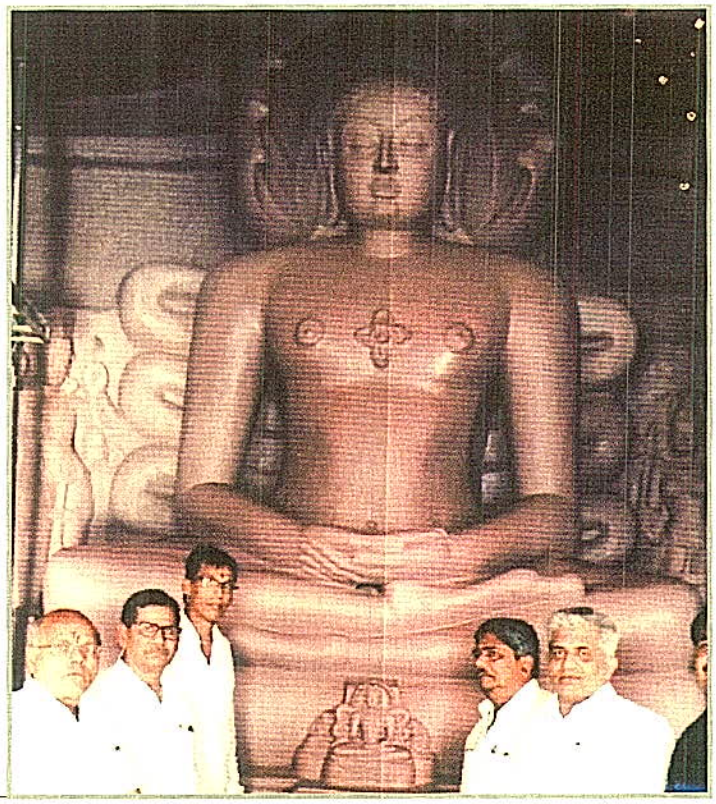

अखिल भारतीय निबन्ध (व्यावहारिक सुझाव) प्रतियोगिता

आयोजक - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
अन्तिम तिथि - 30 सितम्बर 2016
शब्द सीमा - 2500 शब्द

वर्ग-1, युवावर्ग
विषय- जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका
पात्रता- 45 वर्ष से कम आयु का कोई भी दि. जैन युवा

वर्ग-2, महिलावर्ग
विषय- जैन तीर्थों की प्रगति एवं व्यवस्था में महिलाओं की सहभागिता
पात्रता- कोई भी दिगम्बर जैन महिला

नियम-

1. लेख ए-4 आकार के कागज पर सुवाच्य हस्तलिपि या कम्पोज कराकर डबल स्पेस में 2 प्रतियों में भेजें।
2. युवा वर्ग के प्रतिभागी आयु का प्रमाण पत्र भेजें।
3. लेख के उपर एक पृष्ठ पर अपना पूरा नाम, पत्राचार का पता, फोन नं./सेल नं. लिखें।
4. 11 से अधिक लेख एकत्र कर एक साथ भिजवाने वाले श्रावक/श्राविकाओं को विशेष पुरस्कार दिया जायेगा।
5. दोनों वर्गों हेतु प्रथक-प्रथक पुरस्कार राशि निमन्वत है-

प्रथम पुरस्कार - 21000.00 एवं प्रमाण पत्र
द्वितीय पुरस्कार- 11000.00 ,,
तृतीय पुरस्कार- 5000.00 ,,
सभी प्रतिभागियों को भेंट स्वरूप साहित्य एवं प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा।

6. लेख भेजने का पता- डॉ. अनुपम जैन
प्रधान सम्पादक- जैन तीर्थवंदना
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452009
anupamjain3@rediffmail.com

संतोष जैन पेंढारी / महामंत्री